Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

RAMNAM G.K.V.

११०

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
कृपया पुस्तक के ऊपर कोई निशान आदि
न लगायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या ....   आगत संख्या..........

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित ३० वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा ५० पैसे प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्य धर्मदत्त
स्मृति संग्रह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामनाम

गांधीजी

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर
अहमदाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

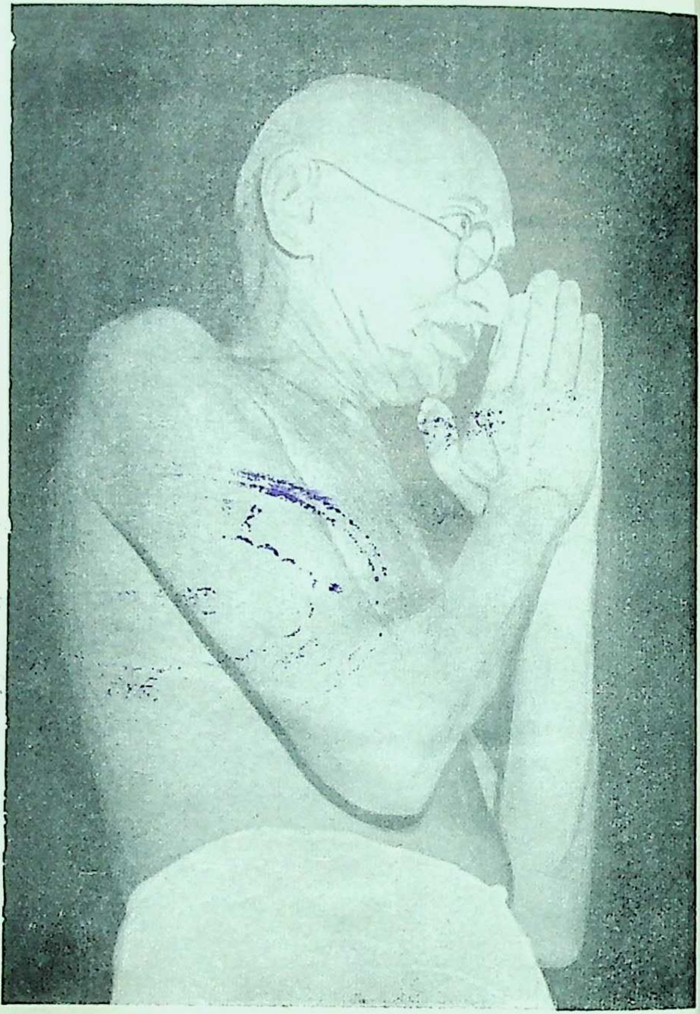

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामनाम

04595

गांधीजी

वैद्य धर्मदत्त
स्मृति संग्रह

पुस्तकालय
पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

नवजीवन प्रकाशन मंदिर
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
अहमदाबाद

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद – १४

© सर्वाधिकार नवजीवन ट्रस्टके अधीन, १९४९

D
११०

पहला संस्करण १००००, १९४९
पुनर्मुद्रण १००००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

५० नये पैसे जनवरी, १९५९

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकका निवेदन

रामनामके प्रति गांधीजीके हृदयमें श्रद्धाका बीज बोनेवाली अुनकी दाअी रंभा थी। अिसका अुल्लेख गांधीजीने खुद अपनी 'आत्मकथा' में किया है। बचपनमें अुनके हृदयमें जो बीज बोया गया था, वह पौधा बनकर गांधीजीकी साधनाके बरसों दरमियान धीरे धीरे विकास करता गया। आध्यात्मिक, मानसिक और शारीरिक तीनों तरहकी कठिनाअियोंमें रामनाम मनुष्यका सबसे बड़ा सहारा बनता है, अैसी श्रद्धा गांधीजीने अपने लेखोंमें बार-बार प्रकट की है। जीवनके आखिरी बरसोंमें कुदरती अुपचारका काम हाथमें लेनेके बाद अुन्होंने कअी बार लिखा है कि रामनाम शरीरकी बीमारियोंको मिटानेका रामबाण कुदरती अिलाज है।

रामनामके बारेमें गांधीजीकी अिस श्रद्धाको प्रकट करनेवाले लेखोंका अंग्रेजीमें संपादन करके श्री भारतन् कुमारप्पाने जो पुस्तक तैयार की थी, अुसे नवजीवन कार्यालयने प्रकाशित किया है। यह हिन्दुस्तानी संस्करण अुसीके आधार पर तैयार किया गया है।

गांधी-साहित्य और रामनामके प्रेमियोंको यह संग्रह बहुत पसन्द आयेगा, अैसे विश्वाससे ही यह प्रकाशित किया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

१९५१

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादकका निवेदन

गांधीजीको बचपनसे ही दुःखमें रामनाम यानी राम या अीश्वरका नाम लेना सिखाया गया था। अेक सत्याग्रही या अैसे व्यक्तिके नाते, जो दिनके चौबीसों घंटे सत्य या अीश्वरमें अटल श्रद्धा रखता है, गांधीजीने यह जान लिया था कि अीश्वर हर तरहकी कठिनाअीमें — फिर वह शारीरिक हो, मानसिक हो या आध्यात्मिक — हमेशा अुन्हें सान्त्वना और सहारा देता है। अुनकी सबसे पहली परीक्षाओंमें अेक ब्रह्मचर्य-पालनके सम्बन्धमें थी। गांधीजीने कहा है कि अपवित्र विचारोंको रोकनेमें रामनामने अुनकी सबसे बड़ी मदद की। रामनामने अुन्हें अुपवासोंकी पीड़ासे पार लगाया। रामनामने ही आत्माकी सारी अकेली लड़ाअियोंमें अुन्हें जिताया, जो राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक क्षेत्रोंके नेताके नाते अुन्हें लड़नी पड़ी थीं। लेकिन अपने-आपको अीश्वरके भरोसे ज्यादा-ज्यादा छोड़नेके दरमियान अुनकी आखिरी खोज यह थी कि रामनाम शारीरिक रोगोंका भी अिलाज है।

सत्यकी खोज करने और मानव जातिके दुःखोंको कम करनेकी अुत्कट अिच्छा रखनेके कारण गांधीजीने लम्बे समयसे शुद्ध हवा, मालिश, कअी तरहके स्नानों, अुपवासों, योग्य आहार, मिट्टीकी पट्टी और अैसे ही दूसरे साधनोंके जरिये रोग मिटानेके सादे और सस्ते तरीके खोज निकाले थे। अुनका विश्वास था कि आज व्यापारके लिअे बड़े पैमाने पर बनाअी जानेवाली और आखिरमें मनुष्य-शरीरको नुकसान पहुंचानेवाली बेशुमार दवाओंके बनिस्बत अिलाजके ये तरीके कुदरत या अीश्वरके नियमोंसे ज्यादा मेल खाते हैं।

लेकिन मनुष्य सिर्फ शरीर ही नहीं है बल्कि और भी कुछ है; अिसलिअे गांधीजीका यह पक्का विश्वास था कि मनुष्यकी बीमारियोंका सिर्फ शारीरिक अिलाज ही काफी नहीं है। शरीरके साथ बीमारके मन और आत्माका भी अिलाज करनेकी जरूरत है। जब ये दोनों नीरोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होंगे, तो शरीर अपने-आप नीरोग हो जायगा। गांधीजीने देखा कि अिस ध्येयको पानेके लिअे रामनाम या अुस बड़े डॉक्टरमें हार्दिक श्रद्ध रखने और अुसका सहारा लेने जैसी अुपयोगी कोअी चीज नहीं है। गांधीजीको यकीन था कि जब मनुष्य अपने-आपको पूरी तरह औश्वरके हाथोंमें सौंप देता है और भोजन, व्यक्तिगत सफाअी तथा आम तौर पर अपने-आपको और खास तौर पर काम-क्रोध वगैरा विकारोंको जीतनेके बारेमें और मानव बन्धुओंके साथके अपने सम्बन्धोंके बारेमें औश्वरके नियमोंका पालन करता है, तो वह रोगसे मुक्त रहता है। अैसी स्थितिको प्राप्त करनेके लिअे वे खुद भी हमेशा कोशिश करते रहे। और दूसरोंको वही ध्येय प्राप्त करनेमें मदद पहुंचानेके लिअे अुन्होंने अुरुळीकांचनमें अपनी आखिरी संस्था 'कुदरती अुपचार केन्द्र' कायम की थी, जहां खु अुनके द्वारा अमलमें लाये गये कुदरती अिलाजके अलावा बीमारोंको रामनामकी अुपयोगिता भी सिखाअी जाती है। यह छोटीसी पुस्तक अि बारेमें गांधीजीके विचार और अनुभव अुन्हींके शब्दोंमें पाठकोंके साम संक्षेपमें रखना चाहती है।

भारतन् कुमारप्पा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुक्रमणिका

प्रकाशकका निवेदन ३
संपादकका निवेदन ५
१. बीजारोपण ३
२. नीतिरक्षाका अुपाय ४
३. रामनाम : हमारा अेकमात्र आधार ७
४. रामनाम और राष्ट्रसेवा ८
५. भगवानकी मदद मांगो ९
६. नाम रटनेसे शान्ति ११
७. मुंहसे रामनाम जपना १२
८. रामधुन १३
९. यौगिक क्रियाअें १४
१०. यकीनी अिमदाद १५
११. रामनामका मजाक १५
१२. रामनाम और जंतर-मंतर १६
१३. रामनामका प्रचार १७
१४. मेरा राम १८
१५. राम कौन ? १९
१६. दशरथ-नन्दन राम २०
१७. मेरा राम कौन ? २२
१८. अीश्वर कौन और कहां है ? २२
१९. रामनाम और कुदरती अिलाज २४
२०. कुदरती अिलाज २५
२१. रामनाम –– रामबाण अिलाज २६
२२. सब रोगोंका अिलाज २७
२३. कुदरती अिलाजमें रामनाम २९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२४. आम लोगोंके लिअे अिलाज
२५. रामबाण अुपाय
२६. आयुर्वेद और कुदरती अुपचार
२७. अुरुळीकांचनमें
२८. अुरुळीकांचनमें कुदरती अुपचार
२९. गरीबोंके लिअे कुदरती अिलाज
३०. कुदरती अिलाज और आधुनिक अिलाज
३१. पश्चिमकी ओर नजर न रखें
३२. कुदरतके नियम
३३. विश्वास-चिकित्सा और रामनाम
३४. रामनामके बारेमें भ्रम
३५. बेचैन बना देनेवाली बात
३६. नाम-साधनाकी निशानियां
३७. सर्वधर्म-समभाव
३८. सच्ची रोशनी
३९. अवसानसे अेक दिन पहले
४०. "राम! राम!"
४१. प्रार्थना-प्रवचनोंमें से
४२. रोजके विचार
४३. दो पत्र
परिशिष्ट
सच्चा डॉक्टर राम ही है
सूची

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामनाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीजारोपण

छह-सात सालकी अुम्रसे लेकर १६ वर्ष तक विद्याध्ययन किया, परन्तु स्कूलमें मुझे कहीं धर्म-शिक्षा नहीं मिली। जो चीज शिक्षकोंके पाससे सहज ही मिलनी चाहिये, वह न मिली। फिर भी वायुमंडलमें से तो कुछ न कुछ धर्म-प्रेरणा मिला ही करती थी। यहां धर्मका व्यापक अर्थ करना चाहिये। धर्मसे मेरा अभिप्राय है आत्म-भानसे, आत्म-ज्ञानसे।

वैष्णव संप्रदायमें जन्म होनेके कारण बार-बार वैष्णव मंदिर (हवेली) जाना होता था। परन्तु अुसके प्रति श्रद्धा न अुत्पन्न हुअी। मन्दिरका वैभव मुझे पसन्द न आया। मंदिरोंमें होनेवाले अनाचारोंकी बातें सुन-सुनकर मेरा मन अुनके सम्बन्धमें अुदासीन हो गया। वहांसे मुझे कोअी लाभ न मिला।

परन्तु जो चीज मुझे अिस मन्दिरसे न मिली, वह अपनी धायके पाससे मिल गयी। वह हमारे कुटुम्बमें अेक पुरानी नौकरानी थी। अुसका प्रेम मुझे आज भी याद आता है। मैं पहले कह चुका हूं कि मैं भूत-प्रेत आदिसे डरा करता था। अिस रम्भाने मुझे बताया कि अिसकी दवा रामनाम है। किन्तु रामनामकी अपेक्षा रम्भा पर मेरी अधिक श्रद्धा थी। अिसलिअे बचपनमें मैंने भूत-प्रेतादिसे बचनेके लिअे रामनामका जप शुरू किया। यह सिलसिला यों बहुत दिन तक जारी न रहा; परन्तु जो बीजारोपण बचपनमें हुआ, वह व्यर्थ न गया। रामनाम जो आज मेरे लिअे अेक अमोघ शक्ति हो गया है, अुसका कारण अुस रम्भाबाअीका बोया हुआ बीज ही है।

परन्तु जिस चीजने मेरे दिल पर गहरा असर डाला, वह तो थी रामायणका पारायण। पिताजीकी बीमारीका बहुतेरा समय पोरबन्दरमें गया। वहां वे रामजीके मंदिरमें रोज रातको रामायण सुनते थे। कथा कहनेवाले थे रामचन्द्रजीके परम भक्त बिलेश्वरके लाधा महाराज। अुनके सम्बन्धमें यह कहानी प्रसिद्ध थी कि अुन्हें कोढ़ हो गया था। अुन्होंने कुछ दवा न की — सिर्फ बिलेश्वर महादेव पर चढ़े हुअे बिल्वपत्रोंको कोढ़वाले अंगों पर बांधते रहे, और रामनामका जप करते रहे। अन्तमें अुनका कोढ़ समूल नष्ट हो गया। यह बात चाहे सच हो या झूठ, हम सुननेवालोंने तो सच ही मानी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हां, यह जरूर सच है कि लाधा महाराजने जब कथा आरम्भ की थी, तब अुनका शरीर बिलकुल नीरोग था। लाधा महाराजका स्वर मधुर था। वे दोहा-चौपाअी गाते और अर्थ समझाते थे। खुद अुसके रसमें लीन हो जाते और श्रोताओंको भी लीन कर देते थे। मेरी अवस्था अुस समय कोअी तेरह सालकी होगी; पर मुझे याद है कि अुनकी कथामें मेरा बहुत मन लगता था। रामायण पर जो मेरा अत्यन्त प्रेम है, अुसका पाया यही रामायण-श्रवण है। आज मैं तुलसीदासकी रामायणको भक्तिमार्गका सर्वोत्तम ग्रंथ मानता हूं।

'आत्मकथा' से

२

नीतिरक्षाका अुपाय

मेरे विचारके विकार क्षीण होते जा रहे हैं। हां, अुनका नाश नहीं हो पाया है। यदि मैं विचारों पर भी पूरी विजय पा सका होता, तो पिछले दस बरसोंमें जो तीन रोग — पसलीका वरम, पेचिश और 'अपेंडिक्स' का वरम — मुझे हुअे, वे कभी न होते।* मैं मानता हूं कि नीरोगी आत्माका शरीर भी

---

* मैं तो पूर्णताका अेक विनीत साधक मात्र हूं। मैं अुसका रास्ता भी जानता हूं। परन्तु रास्ता जाननेका अर्थ यह नहीं है कि मैं आखिरी मुकाम पर पहुंच गया हूं। यदि मैं पूर्ण पुरुष होता, यदि मैं विचारोंमें भी अपने तमाम मनोविकारों पर पूरा आधिपत्य कर पाया होता, तो मेरा शरीर पूर्णताको पहुंच गया होता। मैं कबूल करता हूं कि अभी मुझे अपने विचारोंको काबूमें रखनेके लिअे बहुत मानसिक शक्ति खर्च करनी पड़ती है। यदि कभी मैं अिसमें सफल हो सका, तो खयाल कीजिये कि शक्तिका कितना बड़ा खजाना मुझे सेवाके लिअे खुला मिल जायगा! मैं मानता हूं कि मेरी अपेंडिसाअिटिसकी बीमारी मेरे मनकी दुर्बलताका फल थी और नश्तर लगवानेके लिअे तैयार हो जाना भी वही मनकी दुर्बलता थी। यदि मेरे अंदर अहंकारका पूरा अभाव होता, तो मैंने अपनेको होनहारके सुपुर्द कर दिया होता। लेकिन मैंने तो अपने अिसी चोलेमें रहना चाहा। पूर्ण विरक्ति किसी यांत्रिक क्रियासे प्राप्त नहीं होती। धीरज, परिश्रम और अीश्वर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीरोगी होता है। अर्थात् ज्यों-ज्यों आत्मा नीरोग — निर्विकार होती जाती है, त्यों-त्यों शरीर भी नीरोगी होता जाता है। लेकिन यहां नीरोगी शरीरके मानी बलवान शरीर नहीं है। बलवान आत्मा क्षीण शरीरमें ही वास करती है। ज्यों-ज्यों आत्मबल बढ़ता है, त्यों-त्यों शरीरकी क्षीणता बढ़ती है। पूर्ण नीरोगी शरीर बिलकुल क्षीण भी हो सकता है। बलवान शरीरमें बहुत अंशमें रोग रहते हैं। रोग न हों, तो भी वह शरीर संक्रामक रोगोंका शिकार तुरन्त हो जाता है। परन्तु पूर्ण नीरोग शरीर पर अुनका असर नहीं हो सकता। शुद्ध खूनमें अैसे जन्तुओंको दूर रखनेका गुण होता है। . . .

ब्रह्मचर्यका लौकिक अथवा प्रचलित अर्थ तो अितना ही माना जाता है: मन, वचन और कायाके द्वारा विषयेन्द्रियका संयम। यह अर्थ वास्तविक है। क्योंकि अुसका पालन करना बहुत कठिन माना गया है। स्वादेन्द्रियके संयम पर अुतना जोर नहीं दिया गया, अिससे विषयेन्द्रियका संयम ज्यादा मुश्किल बन गया है — लगभग असंभव हो गया है।

मेरा अनुभव तो अैसा है कि जिसने स्वादको नहीं जीता, वह विषयको नहीं जीत सकता। स्वादको जीतना बहुत कठिन है। परन्तु स्वादकी विजयके साथ ही विषयकी विजय बंधी हुआी है। स्वादको जीतनेके लिअे अेक अुपाय तो यह है कि मसालोंका सर्वथा अथवा जितना हो सके अुतना त्याग किया जाय। और दूसरा अधिक बलवान अुपाय हमेशा यह भावना बढ़ाना है कि भोजन हम स्वादके लिअे नहीं, बल्कि केवल शरीर-रक्षाके लिअे करते हैं। हवा हम स्वादके लिअे नहीं, बल्कि श्वासके लिअे लेते हैं। पानी जैसे हम प्यास बुझानेके लिअे पीते हैं, अुसी प्रकार खाना महज भूख बुझानेके लिअे खाना चाहिये। दुर्भाग्यसे हमारे मां-बाप लड़कपनसे ही हममें अिससे अुलटी आदत डालते हैं। हमारे पोषणके लिअे नहीं, बल्कि अपना झूठा दुलार दिखानेके लिअे, वे हमें तरह-तरहके स्वाद चखाकर हमारी आदत बिगाड़ते हैं। हमें घरके अैसे वायुमंडलके खिलाफ लड़नेकी आवश्यकता है।

परन्तु विषयको जीतनेका स्वर्ण नियम रामनाम अथवा दूसरा कोआी अैसा मंत्र है। द्वादश मंत्र* भी यही काम देता है। अपनी-अपनी भावनाके आराधनाके द्वारा अुस स्थितिमें पहुंचना पड़ता है। — हिन्दी नवजीवन, ६–४–१९२४।

* ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुसार किसी भी मंत्रका जप किया जा सकता है। मुझे लड़कपनसे राम-नाम सिखाया गया। मुझे अुसका सहारा बराबर मिलता रहता है। अिससे मैंने अुसे सुझाया है। जो मंत्र हम जपें, अुसमें हमें तल्लीन हो जाना चाहिये। मंत्र जपते समय दूसरे विचार आवें तो परवाह नहीं। फिर भी यदि श्रद्धा रखकर हम मंत्रका जप करते रहेंगे, तो अंतमें सफलता अवश्य प्राप्त करेंगे। मुझे अिसमें रत्तीभर शक नहीं। यह मंत्र हमारी जीवन-डोर होगा और हमें तमाम संकटोंसे बचावेगा।* अैसे पवित्र मंत्रका अुपयोग किसीको आर्थिक लाभके लिअे हरगिज न करना चाहिये। अिस मंत्रका चमत्कार है हमारी नीतिको सुरक्षित रखनेमें। और यह अनुभव प्रत्येक साधकको थोड़े ही समयमें मिल जायगा। हां, अितना याद रखना चाहिये कि तोतेकी तरह अिस मंत्रको न पढ़ें। अिसमें अपनी आत्मा पूरी तरह लगा देनी चाहिये। तोते यंत्रकी तरह अैसे मंत्र पढ़ते हैं। हमें अुन्हें ज्ञानपूर्वक पढ़ना चाहिये — अवांछनीय विचारोंको मनसे निकालनेकी भावना रखकर और मंत्रकी अैसा करनेकी शक्तिमें विश्वास रखकर।

हिन्दी नवजीवन, २५–५–१९२४

---

* अेक ब्रह्मचारीको ब्रह्मचर्य सिद्ध करनेके अुपाय सुझाते हुअे गांधीजीने लिखा था :

“आखिरी अुपाय प्रार्थनाका है। ब्रह्मचर्य साधनेकी अिच्छा रखनेवाला हर रोज नियमसे, सच्चे हृदयसे रामनाम जपे और अीश्वरकी कृपा चाहे।” — यंग अिण्डिया, २९–४–’२६

अेक प्रयत्नशील साधकको गांधीजीने लिखा था :

“रामकी मदद लेकर हमें विकारोंके रावणका वध करना है, और वह सम्भवनीय है। जो राम पर भरोसा रख सको तो तुम श्रद्धा रखकर निश्चिंतताके साथ रहना। सबसे बड़ी बात यह है कि आत्म-विश्वास कभी मत खोना। खानेका खूब माप रखना, ज्यादा और ज्यादा तरहका भोजन न करना।” — हिन्दी नवजीवन, २०–१२–’२८

“जब तुम्हारे विकार तुम पर हावी होना चाहें, तब तुम घुटनोंके बल झुककर भगवानसे मददकी प्रार्थना करो। रामनाम अचूक रूपसे मेरी मदद करता है। बाहरी मददके [illegible] करो।” — ‘अनीतिकी राहपर’के दूसरे संस्करणकी भूमिका (१९२८) से।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३

रामनाम : हमारा अेकमात्र आधार

राम, अल्लाह, गॉड सब मेरे नजदीक अेकार्थक शब्द हैं। मैंने देखा कि सीधे-भोले लोगोंने धोखेसे अपना यह खयाल बना लिया है कि मुसीबतके समय मैं अुनको दिखाअी देता हूं। मैं अिस वहमको दूर कर देना चाहता हूं। मैं किसीको दर्शन नहीं देता। अेक नश्वर शरीर पर भरोसा रखना महज अुनका भ्रम है। अिसलिअे मैंने अुनके सामने अेक सादा और सरल नुस्खा रखा है, जो कभी बेकार नहीं जाता — अर्थात् हर रोज सुबह सूरज निकलनेके पहले और शामको सोनेके वक्त अपनी प्रतिज्ञाओंको पूरी करनेके लिअे अीश्वरकी सहायता मांगना। लाखों हिन्दू अीश्वरको रामके नामसे पहचानते हैं। बचपनमें जब-जब मैं डरता था, तब मुझे रामनाम लेनेको कहा जाता था। मेरे कितने ही साथी अैसे हैं, जिन्हें मुसीबतके वक्त रामनामसे बड़ी तसल्ली मिली है। मैंने धाराला और अछूतोंको भी रामनाम बताया। मैं अपने अुन पाठकोंके सामने भी अिसे पेश करता हूं, जिनकी दृष्टि धुंधली नहीं हुअी है और जिनकी श्रद्धा बहुत विद्वत्ता प्राप्त करनेसे मन्द नहीं हो गअी है। विद्वत्ता हमें जीवनकी अनेक अवस्थाओंसे पार ले जाती है, पर संकट और प्रलोभनके समय वह हमारा साथ बिलकुल नहीं देती। अुस हालतमें अकेली श्रद्धा ही हमें अुबारती है। रामनाम अुन लोगोंके लिअे नहीं है, जो अीश्वरको हर तरहसे फुसलाना चाहते हैं और हमेशा अपनी रक्षाकी आशा अुससे लगाये रहते हैं। यह अुन लोगोंके लिअे है, जो अीश्वरसे डर कर चलते हैं, और जो संयमपूर्वक जीवन बिताना चाहते हैं; लेकिन अपनी निर्बलताके कारण अुसका पालन नहीं कर पाते।

हिन्दी नवजीवन, २२–१–१९२५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४

रामनाम और राष्ट्रसेवा

सवाल — क्या किसी पुरुष या स्त्रीको राष्ट्रीय सेवामें भाग लि[ये] बिना रामनामके अुच्चारण मात्रसे आत्मदर्शन प्राप्त हो सकता है? मैंने य[ह] प्रश्न अिसलिअे पूछा है कि मेरी कुछ बहनें कहा करती हैं कि हम[ें] गृहस्थीके कामकाज करने तथा यदा-कदा दीन-दुःखियोंके प्रति दयाभाव दिखान[े]के अतिरिक्त और किसी कामकी जरूरत नहीं है।

जवाब — अिस प्रश्नने केवल स्त्रियोंको ही नहीं, बल्कि बहुतों पुरुषोंको भी अुलझनमें डाल रखा है और मुझे भी अिसने धर्म-संकट[में] डाला है। मुझे यह बात मालूम है कि कुछ लोग अिस सिद्धान्तके मानने वाले हैं कि काम करनेकी कतअी जरूरत नहीं और परिश्रम मात्र व्यर्थ है। मैं अिस खयालको बहुत अच्छा तो नहीं कह सकता। अलबत्ता, अग[र] मुझे अुसे स्वीकार करना ही हो तो, मैं अुसके अपने ही अर्थ लगाकर अ[ुसे] स्वीकार कर सकता हूं। मेरी नम्र सम्मति यह है कि मनुष्यके विकास[के] लिअे परिश्रम करना अनिवार्य है। फलका विचार किये बिना परिश्र[म] करना जरूरी है। रामनाम या अैसा ही कोअी पवित्र नाम जरूरी है- महज लेनेके लिअे ही नहीं, बल्कि आत्मशुद्धिके लिअे, प्रयत्नोंको सहार[ा] पहुंचानेके लिअे और अीश्वरसे सीधे-सीधे रहनुमाअी पानेके लिअे। अिसलि[अे] रामनामका अुच्चारण कभी परिश्रमके बदले काम नहीं दे सकता। वह [तो] परिश्रमको अधिक बलवान बनाने और अुसे अुचित मार्ग पर ले चलने[के] लिअे है। यदि परिश्रम मात्र व्यर्थ है, तब फिर घर-गृहस्थीकी चिन्ता क्यों? और दीन-दुःखियोंको यदा-कदा सहायता किसलिअे? अिसी प्रयत्नमें राष्ट्[र]सेवाका अंकुर भी मौजूद है। मेरे लिअे तो राष्ट्रसेवाका अर्थ मानव-जाति[की] सेवा है। यहां तक कि कुटुम्बकी निर्लिप्त भावसे की गअी सेवा भी मानव जातिकी सेवा है। अिस प्रकारकी कौटुम्बिक सेवा अवश्य ही राष्ट्रसेवाक[ी] ओर ले जाती है। रामनामसे मनुष्यमें अनासक्ति और समता आती है रामनाम आपत्तिकालमें अुसे कभी धर्मच्युत नहीं होने देता। गरीबसे गरी[ब]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लोगोंकी सेवा किये बिना या अुनके हितमें अपना हित माने बिना मोक्ष पाना मैं असम्भव मानता हूं।

हिन्दी नवजीवन, २१–१०–१९२६

सेवाकार्य या माला-जप ?

स० — सेवाकार्यके कठिन अवसरों पर भगवद्‌भक्तिके नित्य नियम नहीं निभ पाते, तो क्या अिसमें कोअी हर्ज है? दोनोंमें से किसको प्रधानता दी जाय, सेवाकार्यको अथवा माला-जपको?

ज० — कठिन सेवाकार्य हो या अुससे भी कठिन अवसर हो, तो भी भगवद्‌भक्ति यानी रामनाम बन्द हो ही नहीं सकता। अुसका बाह्य रूप प्रसंगके मुताबिक बदलता रहेगा। माला छूटनेसे रामनाम, जो हृदयमें अंकित हो चुका है, थोड़े ही छूट सकता है?

हरिजनसेवक, १७–२–१९४६

५

भगवानकी मदद मांगो

मैं सारे हिन्दुस्तानके विद्यार्थियोंके साथ होनेवाले अपने पत्रव्यवहारसे जानता हूं कि ढेरों पुस्तकों द्वारा पाये हुअे ज्ञानसे अपने दिमागोंको भर कर वे कैसे पंगु बन गये हैं। कुछ तो अपने दिमागका संतुलन खो बैठे हैं, कुछ पागल-से हो गये हैं, तो कुछ अनीतिकी राह पर चल पड़े हैं — जिससे वे अपने-आपको रोक नहीं सकते। अुनकी यह बात सुनकर मेरा हृदय सहानुभूति और दयासे भर जाता है कि अधिकसे अधिक प्रयत्न करके भी वे अपने जीवनको बदल नहीं सकते। वे दुःखी होकर मुझसे पूछते हैं: "हमें बताअिये कि शैतानसे हम कैसे पिंड छुड़ायें? जिस अनीति और अपवित्रता-ने हमें धर दबोचा है, अुससे हम अपने-आपको कैसे छुड़ायें?" जब मैं अुन्हें रामनाम जपने और भगवानके सामने झुक कर अुसकी सहायता मांगनेकी बात कहता हूं, तो वे मेरे पास आकर कहते हैं: "हम नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जानते भगवान कहां है? हम नहीं जानते प्रार्थना करना क्या होता है?" विद्यार्थियोंकी आज अैसी दयनीय स्थिति हो गअी है।...

तामिल भाषाका अेक वचन मैं कभी भूलता नहीं। अुसका अर्थ है: "निराधारका आधार भगवान है।" अगर आप अुससे सहायताकी प्रार्थना करना चाहते हैं, तो आप अपने सच्चे रूपमें अुसके पास जायें, किसी तरहका संकोच या दुराव-छिपाव न रख कर अुसकी शरण लें और अिस बातकी आशंका न रखें कि आप जैसे अधम और पतितको वह कैसे सहायता दे सकता है — कैसे अुबार सकता है। जिसने अपनी शरणमें आये लाखों-करोड़ोंकी सहायता की, वह क्या आपको असहाय छोड़ देगा? वह किसी तरहका पक्षपात और भेदभाव नहीं रखता। आप देखेंगे कि वह आपकी हरअेक प्रार्थना सुनता है। अधमसे अधमकी भी प्रार्थना भगवान सुनेगा।* यह बात मैं अपने अनुभवसे कहता हूं। मैं अिस नरककी यातनाओंसे गुजर चुका हूं। पहले आप भगवानकी शरण जाअिये और आपको सब कुछ मिल जायगा।

यंग अिन्डिया, ४–४–१९२९

---

* लेकिन प्रार्थना केवल शब्दोंकी या कानोंकी कसरत ही नहीं है। वह किसी निरर्थक मंत्र या सूत्रका जप नहीं है। अगर रामनाम आत्माको जाग्रत न कर सके, तो आप अुसका कितना भी जप क्यों न करें, सब व्यर्थ जायगा। यदि आप शब्दोंके बिना भी हृदयसे भगवानकी प्रार्थना करें, तो वह अुस प्रार्थनासे कहीं अच्छी है जिसमें शब्द तो बहुत हैं, परन्तु हृदय नहीं है। प्रार्थना अुस आत्माकी मांगके स्पष्ट अुत्तरमें होनी चाहिये, जो हमेशा अुसकी भूखी रहती है। और जिस तरह भूखा आदमी स्वादिष्ठ भोजन पाकर प्रसन्न होता है, अुसी तरह भूखी आत्मा हार्दिक प्रार्थनासे आनन्दका अनुभव करती है। मैं अपने और अपने साथियोंके अनुभवसे यह बात कहता हूं कि जिसने प्रार्थनाके चमत्कारका अनुभव किया है, वह भोजनके बिना तो कअी दिनों तक रह सकता है, लेकिन प्रार्थनाके बिना अेक क्षण भी नहीं रह सकता। क्योंकि प्रार्थनाके बिना आन्तरिक शान्ति नहीं मिलती। — यंग अिंडिया, २३–१–१९३०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम रटनसे शान्ति

"अेक ही चीजका जो यह बार-बार पाठ होता है, वह मेरे कानको कुछ रुचता नहीं। सम्भव है कि यह मेरे बुद्धिवादी गणिती स्वभावका दोष हो। पर वही श्लोक नित्य बार-बार गाये जायें, यह मुझे अच्छा नहीं लगता। अुदाहरणके लिअे 'बाक' के अलौकिक संगीतमें भी जब वही अेक पद ('हे पिता, अुन्हें क्षमा कर दे। वे नहीं जानते कि वे क्या करते हैं।') बार-बार गाया जाता है, तब मेरे मन पर अुसका कोअी प्रभाव नहीं पड़ता।"

गांधीजीने मुसकराते हुअे कहा: "पर आपके गणितमें क्या पुनरावर्ती दशमलव नहीं होता?"

"किन्तु प्रत्येक दशमलवसे अेक नवीन ही वस्तु निकलती है।"

गांधीजी: "अिसी प्रकार प्रत्येक जपमें नूतन अर्थ रहता है। प्रत्येक जप मनुष्यको भगवानके अधिक समीप ले जाता है, यह बिलकुल सच्ची बात है। मैं आपसे कहता हूं कि आप किसी सिद्धान्तवादीसे नहीं, बल्कि अैसे आदमीसे बातें कर रहे हैं, जिसने अिस वस्तुका अनुभव जीवनके प्रत्येक क्षणमें किया है — यहां तक कि अिस अविराम क्रियाका बन्द हो जाना जितना सरल है, अुससे अधिक सरल प्राणवायुका निकल जाना है। यह हमारी आत्माकी भूख है।"

"मैं अिसे अच्छी तरह समझ सकता हूं, पर साधारण मनुष्यके लिअे तो यह अेक खाली अर्थशून्य विधि है।"

"मैं मानता हूं, पर अच्छी चीजका भी दुरुपयोग हो सकता है। अिसमें चाहे जितने दम्भके लिअे गुंजाअिश है सही, पर वह दम्भ भी तो सदाचारकी ही स्तुति है न! और मैं यह जानता हूं कि अगर दस हजार दम्भी मनुष्य मिलते हैं, तो अैसे करोड़ों भोले श्रद्धालु भी होंगे, जिन्हें अीश्वरके अिस नामरटनसे शांति मिलती होगी। मकान बनाते समय पाड़ या मचान बांधनेकी जरूरत पड़ती है न — ठीक वैसी ही यह चीज है।"

पिअरे सेरेसोल: "मगर मैं आपकी दी हुअी अिस अुपमाको जरा और आगे ले जाअूं, तो आप यह मान लेंगे न कि जब मकान तैयार हो जाय, तब अुस पाड़को गिरा देना चाहिये?"

"हां, जब शरीर-पात हो जायगा, तब वह भी दूर हो जायगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह क्यों ?"

विलकिनसन अिस संवादको ध्यानपूर्वक सुन रहे थे। अुन्होंने कहा: "यह अिसलिअे कि हम निरन्तर निर्माण ही करते रहते हैं।"

गांधीजी: "अिसलिअे कि हम निरन्तर पूर्णताके लिअे प्रयत्न करते रहते हैं। केवल अेक अीश्वर ही पूर्ण है, मनुष्य कभी पूर्ण नहीं होता।"

हरिजनसेवक, २५–५–१९३५

७

मुंहसे रामनाम जपना

१

सवाल —— दूसरेसे बातचीत करते समय, मस्तिष्क द्वारा कठिन कार्य करते समय या अचानक पैदा होनेवाली घबराहट वगैराके समय भी क्या हृदयमें रामनामका जप हो सकता है? अगर अैसी दशामें भी लोग करते हैं, तो कैसे करते हैं?

जवाब —— अनुभव कहता है कि मनुष्य किसी भी हालतमें हो, चाहे सोता भी क्यों न हो, लेकिन अगर अुसे आदत हो गअी है और रामनाम हृदयस्थ हो गया है, तो जब तक हृदय चलता है, तब तक रामनाम हृदयमें चलता ही रहना चाहिये। वर्ना यह कहा जायगा कि मनुष्य जो रामनाम लेता है, वह अुसके कंठसे ही निकलता है या अुसने सिर्फ हृदयके स्तरको ही छुआ है लेकिन हृदय पर अुसका साम्राज्य स्थापित नहीं हुआ है। यदि रामनामने हृदयका स्वामित्व पा लिया हो तो जप कैसे करते हैं, यह सवाल पूछा ही नहीं जा सकता। क्योंकि जब वह हृदयमें स्थान ले लेता है, तब अुच्चारणकी आवश्यकता ही नहीं रह जाती। लेकिन यह कहना ठीक होगा कि अिस तरह जिनके हृदयमें रामनाम बस गया है, अैसे लोग बहुत कम होंगे। जो शक्ति रामनाममें मानी गअी है, अुसके बारेमें मुझे कोअी शक नहीं है। हरअेक आदमी अिच्छा मात्रसे ही रामनामको अपने हृदयमें अंकित नहीं कर सकता। अुसके लिअे अथक परिश्रम और धीरजकी जरूरत है। पारसमणिको पानेके लिअे धीरज और परिश्रम क्यों न हो? रामनाम तो अुससे भी ज्यादा कीमती, बल्कि अमूल्य है।

हरिजनसेवक, १७–२–१९४६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२

स० — क्या रामनामको हृदयमें ही रखना काफी नहीं है? या अुसके अुच्चारणमें कोअी खास विशेषता है?

ज० — मेरा विश्वास है कि रामनामके अुच्चारणका विशेष महत्त्व है। अगर कोअी जानता है कि अीश्वर सचमुच अुसके हृदयमें बसता है, तो मैं मानता हूं कि अुसके लिअे मुंहसे रामनाम जपना जरूरी नहीं है। लेकिन मैं अैसे किसी आदमीको नहीं जानता। अुलटे, मेरा अपना अनुभव कहता है कि मुंहसे रामनाम जपनेमें कुछ अनोखापन है। क्यों या कैसे, यह जानना आवश्यक नहीं।

हरिजनसेवक, १४–३–१९४६

८

रामधुन

गांधीजीने कहा — जिन्हें थोड़ा भी अनुभव है, वे दिलसे गायी जानेवाली रामधुनकी, यानी भगवानका नाम जपनेकी शक्तिको जानते हैं। मैं लाखों सिपाहियोंके अपने बैण्डकी लयके साथ कदम अुठाकर मार्च करनेसे पैदा होनेवाली ताकतको जानता हूं। फौजी ताकतने दुनियामें जो बरबादी की है, अुसे रास्ते चलनेवाला भी देख सकता है। हालांकि यह कहा जाता है कि लड़ाअी खतम हो गअी, फिर भी अुसके बादके नतीजे लड़ाअीसे भी ज्यादा बुरे साबित हुअे हैं। यही फौजी ताकतके दिवालियापनका सबूत है।

मैं बिना किसी हिचकिचाहटके यह कह सकता हूं कि लाखों आदमियों द्वारा सच्चे दिलसे अेक ताल और अेक लयके साथ गाअी जानेवाली रामधुनकी ताकत फौजी ताकतके दिखावेसे बिलकुल अलग और कअी गुना बढ़ी-चढ़ी होती है। दिलसे भगवानका नाम लेनेसे आजकी बरबादीकी जगह टिकाअू शान्ति और आनन्द पैदा होगा।

हरिजनसेवक, ३१–८–१९४७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९

यौगिक क्रियाअें

अेक मिशनरी मित्रने गांधीजीसे पूछा कि क्या वे कोअी यौगिक क्रियायें करते हैं। अिसके अुत्तरमें गांधीजीने कहा :

"योगकी क्रियाअें तो मैं जानता नहीं। मैं जो किया करता हूं, अुसे तो बचपनमें अपनी आयासे मैंने सीखा था। मुझे भूतका डर लगता था। अिस पर वह मुझसे कहा करती थी : 'भूत जैसी कोअी चीज है ही नहीं, फिर भी अगर तुझे डर लगे, तो रामनाम ले लिया कर।' मैंने बचपनमें जो सीखा, अुसने मेरे मानसिक आकाशमें विशाल रूप धारण कर लिया है। अिस सूर्यने मेरी घोरसे घोर अंधकारकी घड़ीमें मुझे प्रकाश प्रदान किया है। यही आश्वासन अीसाअीको अीसाका नाम लेनेसे और मुसलमानको अल्लाहका नाम लेनेसे मिलता है।* अिन सब चीजोंका अर्थ तो अेक ही है और समान परिस्थितियोंमें अिनका अेक-सा ही परिणाम आता है। मात्र यह नामस्मरण तोतेकी तरह नहीं होना चाहिये, किन्तु यह नाम-ध्वनि अंतस्तलसे अुठनी चाहिये।

हरिजनसेवक, १२–१२–१९३६

---

* अिस्लामका अल्लाह वही है, जो अीसाअियोंका गॉड और हिन्दुओंका अीश्वर है। जिस तरह हिन्दू धर्ममें अीश्वरके अनेक नाम हैं, अुसी तरह अिस्लाममें भी अीश्वरके कअी नाम हैं। वे नाम व्यक्तित्वको नहीं, बल्कि गुणोंको बताते हैं। और तुच्छ मनुष्यने अपने नम्र तरीकेसे सर्वशक्तिमान अीश्वरका अुसके गुणों द्वारा वर्णन करनेका प्रयत्न किया है, यद्यपि वह गुणातीत, अवर्णनीय और असीम है। — हरिजन, १२–८–१९३८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०

यकीनी अिमदाद

अिसमें कोअी शक नहीं कि रामनाम सबसे ज्यादा यकीनी अिमदाद है। अगर दिलसे अुसका जप किया जाय, तो वह हरअेक बुरे खयालको तुरन्त दूर कर सकता है। और जब बुरा खयाल मिट गया, तो अुसका बुरा असर होना संभव नहीं। अगर मन कमजोर है, तो बाहरकी सब अिमदाद बेकार है, और मन पवित्र है, तो वह सब गैरजरूरी है। अिसका यह मतलब हरगिज न समझना चाहिये कि अेक पवित्र मनवाला आदमी सब तरहकी छूट लेते हुअे भी बेदाग बचा रह सकता है। अैसा आदमी खुद ही अपने साथ कोअी छूट न लेगा। अुसका सारा जीवन ही अुसकी भीतरी पवित्रताका सच्चा सबूत होगा। गीतामें ठीक ही कहा है कि आदमीका मन ही अुसे बनाता है और वही अुसे बिगाड़ता भी है। मिल्टन जब यह कहता है कि "मनुष्यका मन ही सब कुछ है, वही स्वर्गको नरक और नरकको स्वर्ग बना देता है", तो वह भी अिसी विचारकी व्याख्या करता है।

हरिजनसेवक, १२–५–१९४६

११

रामनामका मजाक

स० — बनारसका रामनाम बैंक, और रामनाम छपा कपड़ा पहनना, या शरीर पर रामनाम लिखकर घूमना रामनामका मजाक और हमारा पतन नहीं तो क्या है? अैसी हालतमें सारे रोगोंके रामबाण अिलाजके रूपमें रामनामका प्रचार करके क्या आप अिन ढोंगियोंके हाथमें पत्थर नहीं दे रहे हैं? अन्तर-प्रेरणासे निकला हुआ रामनाम ही रामबाण हो सकता है। और मैं मानता हूं कि अैसी अन्तर-प्रेरणा सच्ची धार्मिक शिक्षासे ही मिलेगी।

ज० — आपने ठीक कहा है। आजकल हमारे अन्दर अितना वहम फैला हुआ है और अितना दम्भ चलता है कि सही चीज करनेमें भी डरना पड़ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। लेकिन अिस तरह डरते रहनेसे तो सत्यको भी छिपाना पड़ सकता है। अिसलिअे सुनहला कानून तो यही है कि जिसे हम सही समझें, अुसे निडर होकर करें। दम्भ और झूठ तो जगतमें चलता ही रहेगा। हमारे सही चीज करनेसे वह कुछ कम ही होगा, बढ़ कभी नहीं सकता। यह ध्यान रहे कि जब चारों ओर झूठ चलता हो, तब हम भी अुसीमें फंसकर अपनेको धोखा न दें। अपनी शिथिलता और अज्ञानके कारण हम अनजाने भी अैसी गलती न करें। हर हालतमें सावधान रहना तो हमारा कर्तव्य है ही। सत्यका पुजारी दूसरा कुछ कर ही नहीं सकता। रामनाम जैसी रामबाण औषध लेनेमें सतत जागृति न हो, तो रामनाम व्यर्थ जाय और हम बहुतसे वहमोंमें अेक और वहम बढ़ा दें।

हरिजनसेवक, २–६–१९४६

१२

रामनाम और जंतर-मंतर

मैं निडर होकर कह सकता हूं कि मेरे रामनामका जंतर-मंतरसे कोअी वास्ता नहीं। मैंने कहा है कि रामनाम अथवा किसी भी रूपमें हृदयसे अीश्वरका नाम लेना अेक महान शक्तिका सहारा लेना है। वह शक्ति जो कर सकती है, सो दूसरी कोअी शक्ति नहीं कर सकती। अुसके मुकाबले अणुबम भी कोअी चीज नहीं। अुससे सब दर्द दूर होते हैं। हां, यह सही है कि हृदयसे नाम लेनेकी बात कहना आसान है, करना कठिन है। वह कितना ही कठिन क्यों न हों, फिर भी वही सर्वोपरि वस्तु है।

हरिजनसेवक, १३–१०–१९४६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१३

रामनामका प्रचार

मुझे यह प्रतीत होता है कि रामनामकी महिमाके बारेमें मुझे अब कुछ नया सीखना बाकी नहीं है, क्योंकि मुझें अुसका अनुभव-ज्ञान है। और अिसीलिअे मेरा यह अभिप्राय है कि खादी और स्वराज्यके प्रचारकी तरह रामनामका प्रचार नहीं हो सकता। अिस कठिन कालमें रामनामका अुलटा जप होता है। अर्थात् बहुतसे स्थानोंमें केवल आडम्बरके लिअे, कुछ स्थानोंमें अपने स्वार्थके लिअे और कुछ जगहोंमें व्यभिचार करनेके लिअे अिसका जप होता हुआ मैंने देखा है। यदि केवल अुसके अुलटे अक्षरोंका ही जप हो, तो अुसके बारेमें मुझे कुछ भी नहीं कहना है। यह हमने पढ़ा है कि शुद्ध हृदयके लोगोंने अुलटा जप जपकर भी मुक्ति प्राप्त की है। और अिसे हम मान भी सकते हैं। लेकिन शुद्ध अुच्चारण करनेवाले पापी पापकी पुष्टिके लिअे रामनामके मंत्रका जप करें, तो अिसे हम क्या कहेंगे? अिसीलिअे मैं रामनामके प्रचारसे डरता हूं। जो लोग यह मानते हैं कि भजन-मंडलीमें बैठकर राम-नामकी रट लगानेसे, शोर करनेसे ही भूत, भविष्य और वर्तमानके सब पाप नष्ट हो जायेंगे और कुछ भी करना बाकी न रहेगा, अुन्हें तो दूरसे ही नमस्कार करना चाहिये। अुनका अनुकरण नहीं किया जा सकता।

अिसलिअे जो रामनामका प्रचार करना चाहता है, अुसे स्वयं अपने हृदयमें ही अुसका प्रचार करके अुसे शुद्ध कर लेना चाहिये और अुस पर रामका साम्राज्य स्थापित करके अुसका प्रचार करना चाहिये। फिर अुसे संसार भी ग्रहण करेगा और लोग भी रामनामका जप करने लगेंगे। लेकिन हर किसी स्थान पर रामनामका जैसा-तैसा भी जप करना पाखंडकी वृद्धि करना है और नास्तिकताके प्रवाहका वेग बढ़ाना है।

हिन्दी नवजीवन, १९–११–१९२५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१४

मेरा राम

जब गांधीजीसे पूछा गया कि गैर-हिन्दू रामधुनमें कैसे भाग ले सकते हैं, तब अुन्होंने कहा :

"जब कोअी यह अेतराज अुठाता है कि रामका नाम लेना या रामधुन गाना तो सिर्फ हिन्दुओंके लिअे है, मुसलमान अुसमें किस तरह शरीक हो सकते हैं, तब मुझे मन-ही-मन हंसी आती है। क्या मुसलमानोंका भगवान हिन्दुओं, पारसियों या अीसाअियोंके भगवानसे जुदा है? नहीं, सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापी अीश्वर तो अेक ही है। अुसके कअी नाम हैं, और अुसका जो नाम हमें सबसे ज्यादा प्यारा होता है, अुस नामसे हम अुसको याद करते हैं।

"मेरा राम, हमारी प्रार्थनाके समयका राम, वह अैतिहासिक राम नहीं है, जो दशरथका पुत्र और अयोध्याका राजा था। वह तो सनातन, अजन्मा और अद्वितीय राम है। मैं अुसीकी पूजा करता हूं। अुसीकी मदद चाहता हूं। आपको भी यही करना चाहिये। वह समान रूपसे सब किसीका है। अिसलिअे मेरी समझमें नहीं आता कि क्यों किसी मुसलमानको या दूसरे किसीको अुसका नाम लेनेमें अेतराज होना चाहिये? लेकिन यह कोअी जरूरी नहीं कि वह रामके रूपमें ही भगवानको पहचाने — अुसका नाम ले। वह मन-ही-मन अल्लाह या खुदाका नाम भी अिस तरह जप सकता है, जिससे अुसमें बेसुरापन न आवे।"

हरिजनसेवक, २८–४–१९४६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम कौन ?

१

स० — आप कहा करते हैं कि प्रार्थनामें प्रयुक्त रामका आशय दशरथके पुत्र रामसे नहीं। आपका आशय जगन्नियंतासे होता है। हमने भलीभांति देखा है कि रामधुनमें 'राजाराम, सीताराम', 'राजाराम, सीताराम' का कीर्तन होता है। और जयकार भी 'सीतापति रामचन्द्रकी जय' का लगता है। मैं विनम्र भावसे पूछता हूं कि ये सीतापति राम कौन हैं? ये राजाराम कौन हैं? क्या ये दशरथके सुपुत्र राम नहीं हैं?

ज० — रामधुनमें 'राजाराम', 'सीताराम' अवश्य रटा जाता है। वह दशरथ-नन्दन राम नहीं तो कौन हैं? तुलसीदासजीने तो अिसका अुत्तर दिया ही है, तो भी मुझे कहना चाहिये कि मेरी राय कैसे बनी है। रामसे रामनाम बड़ा है। हिन्दू धर्म महासागर है। अुसमें अनेक रत्न भरे हैं। जितना गहरे पानीमें जाओ, अुतने ज्यादा रत्न मिलते हैं। हिन्दू धर्ममें अीश्वरके अनेक नाम हैं। सैकड़ों लोग राम-कृष्णको अैतिहासिक व्यक्ति मानते हैं, और मानते हैं कि जो राम दशरथके पुत्र माने जाते हैं, वही अीश्वरके रूपमें पृथ्वी पर आये और अुनकी पूजासे आदमी मुक्ति पाता है। अैसा ही कृष्णके लिअे है। अितिहास, कल्पना और शुद्ध सत्य आपसमें अितने ओतप्रोत हैं कि अुन्हें अलग करना लगभग असंभव है। मैंने अपने लिअे अीश्वरकी सब संज्ञायें रखी हैं। और अुन सबमें मैं निराकार, सर्वस्थ रामको ही देखता हूं। मेरे लिअे मेरा राम सीतापति दशरथ-नन्दन कहलाते हुअे भी वह सर्वशक्तिमान अीश्वर ही है, जिसका नाम हृदयमें होनेसे मानसिक, नैतिक और भौतिक सब दुःखोंका नाश हो जाता है।

२

गांधीजीने आगे कहा: "जिस रामके नामको मैं सब बीमारियोंकी रामबाण दवा कहता हूं, वह राम न तो अैतिहासिक राम है, और न अुन लोगोंका राम है, जो अुसका अिस्तेमाल जादू-टोनेके लिअे करते हैं। सब रोगोंकी रामबाण दवाके रूपमें मैं जिस रामका नाम सुझाता हूं, वह तो खुद अीश्वर ही है, जिसके नामका जप करके भक्तोंने शुद्धि और शान्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाओ है। और मेरा यह दावा है कि रामनाम सभी बीमारियोंकी, फिर वे तनकी हों, मनकी हों या रूहानी हों, अेक ही अचूक दवा है। अिसमें शक नहीं कि डॉक्टरों या वैद्योंसे शरीरकी बीमारियोंका अिलाज कराया जा सकता है। लेकिन रामनाम तो आदमीको खुद ही अपना वैद्य या डॉक्टर बना देता है, और अुसे अपनेको अन्दरसे नीरोग बनानेकी संजीवनी हासिल करा देता है। जब कोओी बीमारी अिस हद तक पहुंच जाती है कि अुसे मिटाना मुमकिन नहीं रहता, अुस वक्त भी रामनाम आदमीको अुसे शान्त और स्वस्थ भावसे सह लेनेकी ताकत देता है।" अुन्होंने और कहा: "जिस आदमीको रामनाममें श्रद्धा है, वह जैसे-तैसे अपनी जिन्दगीके दिन बढ़ानेके लिअे नामी-गरामी डॉक्टरों और वैद्योंके दरकी खाक नहीं छानेगा और यहांसे वहां मारा-मारा नहीं फिरेगा। रामनाम डॉक्टरों और वैद्योंके हाथ टेक देनेके बाद लेनेकी चीज भी नहीं। वह तो आदमीको डॉक्टरों और वैद्योंके बिना भी अपना काम चला सकनेवाला बनानेकी चीज है। रामनाममें श्रद्धा रखनेवालेके लिअे वह अुसकी पहली और आखिरी दवा है।"

हरिजनसेवक, २–६–१९४६

१६

दशरथ-नन्दन राम

अेक आर्यसमाजी भाओी लिखते हैं:

"जिन अविनाशी रामको आप ओीश्वर-स्वरूप मानते हैं, वे दशरथ-नन्दन सीतापति राम कैसे हो सकते हैं? अिस दुविधाका मारा मैं आपकी प्रार्थनामें बैठता तो हूं, लेकिन रामधुनमें हिस्सा नहीं लेता। यह मुझे चुभता है। क्योंकि आपका कहना तो यह है कि सब हिस्सा लें, और यह ठीक भी है। तो क्या आप अैसा कुछ नहीं कर सकते जिससे सब हिस्सा ले सकें?"

सबके मानी मैं बता चुका हूं। जो लोग दिलसे हिस्सा ले सकें, जो अेक सुरमें गा सकें, वे ही अिसमें हिस्सा लें, बाकी शान्त रहें। लेकिन यह तो छोटी बात हुओी। बड़ी बात तो यह है कि दशरथ-नन्दन राम अविनाशी कैसे हो सकते हैं? यह सवाल खुद तुलसीदासजीने अुठाया था और अुन्होंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अिसका जवाब भी दिया था। अैसे सवालोंका जवाब बुद्धिसे नहीं दिया जा सकता — अुससे खुद बुद्धिको भी सन्तोष नहीं होता। यह दिलकी बात है। दिलकी बात दिल ही जाने। शुरूमें मैंने रामको सीतापतिके रूपमें पूजा। लेकिन जैसे-जैसे मेरा ज्ञान और अनुभव बढ़ता गया, वैसे-वैसे मेरा राम अविनाशी और सर्वव्यापी बनता गया, और है। अिसका मतलब यह है कि वह सीतापति बना रहा और साथ ही सीतापतिके मानी भी बढ़ गये। संसार अैसे ही चलता है। जिसका राम दशरथ राजाका ही रहा, अुसका राम सर्वव्यापी नहीं हो सकता; लेकिन सर्वव्यापी रामका बाप दशरथ भी सर्वव्यापी बन जाता है — पिता और पुत्र अेक हो जाते हैं। कहा जा सकता है कि यह सब मनमानी है। 'जैसी जिसकी भावना, वैसा अुसको होय'। दूसरा कोअी चारा मुझे नजर नहीं आता। अगर मूलमें सब धर्म अेक हैं, तो हमें सबका अेकीकरण करना है। वे अलग तो पड़े ही हैं, और अलग मानकर हम अेक-दूसरेको मारते हैं। और जब थक जाते हैं, तो नास्तिक बन जाते हैं, और फिर सिवा 'हम'के न अीश्वर रहता है, न कुछ और। लेकिन जब समझ जाते हैं, तो हम कुछ नहीं रह जाते। अीश्वर ही सब कुछ बन जाता है। वह दशरथ-नन्दन, सीतापति, भरत व लक्ष्मणका भाअी है भी और नहीं भी है। जो दशरथ-नन्दन रामको न मानते हुअे भी सबके साथ प्रार्थनामें बैठते हैं, अुनकी बलिहारी है! यह बुद्धिवाद नहीं। यहां मैं यह बता रहा हूं कि मैं क्या करता हूं, और क्या मानता हूं।

हरिजनसेवक, २२–९–१९४६

04595
श्री धर्मदत्त वैद्य संग्रह
पुस्तकालय
पुस्तकालय
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

१७

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरा राम कौन?

आप लोग अुस सर्वशक्तिमान भगवानकी गुलामी मंजूर करें। अिस कोअी मतलब नहीं कि आप अुसे किस नामसे पुकारते हैं। तब आप किस अिन्सान या अिन्सानोंके सामने घुटने नहीं टेकेंगे। यह कहना नादानी है कि मैं राम — महज अेक आदमी — को भगवानके साथ मिलाता हूं। मैं कअी बार खुलासा किया है कि मेरा राम खुद भगवान ही है। वह पहले था, आज भी मौजूद है, आगे भी हमेशा रहेगा। न कभी वह पैदा हुआ न किसीने अुसे बनाया। अिसलिअे आप जुदा-जुदा धर्मोंको बरदाश्त करें और अुनकी अिज्जत करें। मैं खुद मूर्तियोंको नहीं मानता, मगर मैं मूर्ति-पूजकोंकी अुतनी ही अिज्जत करता हूं, जितनी औरोंकी। जो लोग मूर्तियोंको पूजते हैं, वे भी अुसी अेक भगवानको पूजते हैं, जो हर जगह है, जो अुंगलीसे कटे हुअे नाखूनमें भी है। मेरे अैसे मुसलमान दोस्त हैं, जिनके नाम रहीम, रहमान, करीम हैं। जब मैं अुन्हें रहीम, करीम और रहमान कहकर पुकारता हूं, तो क्या मैं अुन्हें खुदा मान लेता हूं?

हरिजनसेवक, २–६–१९४६

१८

अीश्वर कौन और कहां है?

ब्रह्मचर्य क्या है, यह बताते हुअे मैंने लिखा था कि ब्रह्म यानी अीश्वर तक पहुंचनेका जो आचार होना चाहिये, वह ब्रह्मचर्य है। लेकिन अितना जान लेनेसे अीश्वरके रूपका पता नहीं चलता। अगर अुसका ठीक पता चल जाय, तो हम अीश्वरकी तरफ जानेका ठीक रास्ता भी जान सकते हैं। अीश्वर मनुष्य नहीं है। अिसलिअे वह किसी मनुष्यमें अुतरता है या अवतार लेता है, अैसा कहें तो यह पूरा सत्य नहीं है। अेक तरहसे अीश्वर किसी खास मनुष्यमें अुतरता है, अैसा कहनेका मतलब सिर्फ अितना ही हो सकता है कि वह मनुष्य अीश्वरके ज्यादा नजदीक है। अुसमें हमें ज्यादा अीश्वरपन दिखाअी देता है। अीश्वर तो सब जगह हाजिर है। वह सबमें मौजूद है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अिसलिअे हम सब अीश्वरके अवतार हैं। मगर अैसा कहनेसे कोअी मतलब हल नहीं होता। राम, कृष्ण वगैराको हम अवतार कहते हैं, क्योंकि अुनमें लोगोंने अीश्वरके गुण देखे। आखिर तो राम, कृष्ण वगैरा मनुष्यकी खयाली दुनियामें बसते हैं और अुसकी खयाली तसवीरें ही हैं। अितिहासमें अैसे लोग हो गये या नहीं, अिसके साथ अिन कल्पनाकी तसवीरोंका कोअी सम्बन्ध नहीं। कअी बार हम अितिहासके राम और कृष्णको ढूंढ़ते-ढूंढ़ते मुश्किलोंमें पड़ जाते हैं और हमें कअी तरहकी दलीलोंका सहारा लेना पड़ता है।

सच बात तो यह है कि अीश्वर अेक शक्ति है, तत्त्व है, शुद्ध चैतन्य है, सब जगह मौजूद है। मगर हैरानीकी बात यह है कि अैसा होते हुअे भी सबको अुसका सहारा या फायदा नहीं मिलता, या यों कहें कि सब अुसका सहारा पा नहीं सकते।

बिजली अेक बड़ी ताकत है। मगर सब अुससे फायदा नहीं अुठा सकते। अुसे पैदा करनेका अटल कानून है। अुसके मुताबिक काम किया जाय, तभी बिजली पैदा की जा सकती है। बिजली जड़ है, बेजान चीज है। अुसके अिस्तेमालका कायदा चेतन मनुष्य मेहनत करके जान सकता है। जिस चेतनामय बड़ी भारी शक्तिको हम अीश्वर कहते हैं, अुसके अिस्तेमालका भी नियम तो है ही। लेकिन यह चीज बिलकुल साफ है कि अुस नियमको ढूंढ़नेके लिअे बहुत ज्यादा मेहनतकी जरूरत है। अेक शब्दमें अुस नियमका नाम है ब्रह्मचर्य। ब्रह्मचर्यको पालनेका सीधा रास्ता रामनाम है। यह मैं अपने अनुभवसे कह सकता हूं। तुलसीदास जैसे भक्त और अृषि-मुनियोंने तो वह रास्ता बताया ही है। मेरे अनुभवका कोअी जरूरतसे ज्यादा मतलब न निकाले। रामनाम सब जगह मौजूद रहनेवाली रामबाण दवा है, यह शायद मैंने पहले-पहल अुरुळीकांचनमें ही साफ-साफ जाना था। जो अुसका पूरा अुपयोग जानता है, अुसे जगतमें कम-से-कम बाहरी काम करना पड़ता है। फिर भी अुसका काम बड़े-से-बड़ा होता है।

अिस तरह विचार करते हुअे मैं कहता हूं कि ब्रह्मचर्यकी रक्षाके जो नियम माने जाते हैं, वे तो खेल ही हैं। सच्ची और अमर रक्षा तो रामनाम ही है। राम जब जीभसे अुतरकर हृदयमें बस जाता है, तभी अुसका पूरा चमत्कार दिखलाअी देता है। यह अचूक साधन पानेके लिअे अेकादश व्रत तो हैं ही। मगर कअी साधन अैसे होते हैं कि अुनमें से कौनसा साधन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
और कौनसा साध्य है, यह फर्क करना मुश्किल हो जाता है। अकादश व्रतोंमें से सत्यको ही लें, तो पूछा जा सकता है कि क्या सत्य साधन है और राम साध्य? या राम साधन है और सत्य साध्य है?

मगर मैं सीधी बात पर आअूं। ब्रह्मचर्यका आजका माना हुआ अर्थ लें, तो वह है — जननेंद्रिय पर काबू पाना। अिस संयमका सुनहला रास्ता और अुसकी अमर रक्षा रामनाम ही है।

हरिजनसेवक, २२–६–१९४७

१९

रामनाम और कुदरती अिलाज

दूसरी सब चीजोंकी तरह मेरी कुदरती अिलाजकी कल्पनाने भी धीरे-धीरे विकास किया है। बरसोंसे मेरा यह विश्वास रहा है कि जो मनुष्य अपनेमें औीश्वरका अस्तित्व अनुभव करता है, और अिस तरह विकाररहित स्थिति प्राप्त कर चुकता है, वह लम्बे जीवनके रास्तेमें आनेवाली सारी कठिनाअियोंको जीत सकता है। मैंने जो देखा और धर्मशास्त्रोंमें पढ़ा है, अुसके आधार पर मैं अिस नतीजे पर पहुंचा हूं कि जब मनुष्यमें अुस अदृश्य शक्तिके प्रति पूर्ण जीवित श्रद्धा पैदा हो जाती है, तब अुसके शरीरमें भीतरी परिवर्तन होता है। लेकिन यह सिर्फ अिच्छा करने मात्रसे नहीं हो जाता। अिसके लिअे हमेशा सावधान रहने और अभ्यास करनेकी जरूरत रहती है। दोनोंके होते हुअे भी औीश्वर-कृपा न हो, तो मानव-प्रयत्न व्यर्थ जाता है।

प्रेस रिपोर्ट, १२–६–१९४५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुदरती अिलाज

कुदरती अिलाज और अुपचारका अर्थ है, अैसे अुपचार या अिलाज जो मनुष्यके लिअे योग्य हों। मनुष्य यानी मनुष्यमात्र। मनुष्यमें मनुष्यका शरीर तो है ही, लेकिन अुसमें मन और आत्मा भी है। अिसलिअे सच्चा कुदरती अिलाज तो रामनाम ही है। अिसीलिअे रामबाण शब्द निकला है। रामनाम ही रामबाण अिलाज है। मनुष्यके लिअे कुदरतने अुसीको योग्य माना है। कोअी भी व्याधि हो, अगर मनुष्य हृदयसे रामनाम ले, तो अुसकी व्याधि नष्ट होनी चाहिये। रामनाम यानी अीश्वर, खुदा, अल्लाह, गॉड। अीश्वरके अनेक नाम हैं, अुनमें से जो जिसे ठीक लगे, अुसे वह चुन ले; लेकिन अुसमें हार्दिक श्रद्धा हो, और श्रद्धाके साथ प्रयत्न हो। वह कैसे?

जिस चीजका मनुष्य पुतला बना है, अुसीसे वह अिलाज ढूंढ़े। पुतला पृथ्वी, पानी, आकाश, तेज और वायुका बना है। अिन पांच तत्त्वोंसे जो मिल सके सो ले। अुसके साथ रामनाम तो अनिवार्य रूपसे चलता ही रहे। नतीजा यह आता है कि अितना होते हुअे भी शरीरका नाश हो, तो होने दे और हर्षपूर्वक शरीर छोड़ दे। दुनियामें अैसा कोअी अिलाज नहीं निकला है, जिससे शरीर अमर बन सके। अमर तो आत्मा ही है। अुसे कोअी मार नहीं सकता। अुसके लिअे शुद्ध शरीर पैदा करनेका प्रयत्न तो सब करें। अुसी प्रयत्नमें कुदरती अिलाज अपने आप मर्यादित हो जाता है। और अिससे आदमी बड़े-बड़े अस्पतालों और योग्य डॉक्टरों वगैराकी व्यवस्था करनेसे बच जाता है। दुनियाके असंख्य लोग दूसरा कुछ कर भी नहीं सकते। और जिसे असंख्य नहीं कर सकते, अुसे थोड़े क्यों करें?

हरिजनसेवक, ३–३–१९४६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

२१

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामनाम — रामबाण अिलाज

यह देखकर कि कुदरती अिलाजोंमें मैंने रामनामको रोग मिटानेवाला माना है और अिस सम्बन्धमें कुछ लिखा भी है, वैद्यराज श्री गणेशशास्त्री जोशी मुझसे कहते हैं कि अिसके सम्बन्धका और अिससे मिलता-जुलता साहित्य आयुर्वेदमें काफी पाया जाता है। रोगको मिटानेमें कुदरती अिलाजका अपना बड़ा स्थान है और अुसमें भी रामनाम विशेष है। यह मानना चाहिये कि जिन दिनों चरक, वाग्भट वगैराने लिखा था, अुन दिनों ओीश्वरको रामनामके रूपमें पहचाननेकी रूढ़ि पड़ी नहीं थी। अुस समय विष्णुके नामकी महिमा थी। मैंने तो बचपनसे रामनामके जरिये ही ओीश्वरको भजा है। लेकिन मैं जानता हूं कि ओीश्वरको ॐ नामसे भजो या संस्कृत, प्राकृतसे लेकर अिस देशकी या दूसरे देशकी किसी भी भाषाके नामसे अुसको जपो, परिणाम अेक ही होता है। ओीश्वरको नामकी जरूरत नहीं। वह और अुसका कायदा दोनों अेक ही हैं। अिसलिअे ओीश्वरी नियमोंका पालन ही ओीश्वरका जप है। अतअेव केवल तात्त्विक दृष्टिसे देखें, तो जो ओीश्वरकी नीतिके साथ तदाकार हो गया है, अुसे जपकी जरूरत नहीं। अथवा जिसके लिअे जप या नामका अुच्चारण सांस-अुसांसकी तरह स्वाभाविक हो गया है, वह ओीश्वरमय बन चुका है। यानी ओीश्वरकी नीतिको वह सहज ही पहचान लेता है और सहज भावसे अुसका पालन करता है। जो अिस तरह बरतता है, अुसके लिअे दूसरी दवाकी जरूरत क्या?

अैसा होने पर भी जो दवाओंकी दवा है, यानी राजा दवा है, अुसीको हम कम-से-कम पहचानते हैं। जो पहचानते हैं, वे अुसे भजते नहीं; और जो भजते हैं, वे सिर्फ जबानसे भजते हैं, दिलसे नहीं। अिस कारण वे तोतेके स्वभावकी नकल भर करते हैं, अपने स्वभावका अनुसरण नहीं। अिसलिअे वे सब ओीश्वरको 'सर्वरोगहारी' के रूपमें नहीं पहचानते।

पहचानें भी कैसे? यह दवा न तो वैद्य अुन्हें देते हैं, न हकीम, और न डॉक्टर। खुद वैद्यों, हकीमों और डॉक्टरोंको भी अिस पर आस्था नहीं। यदि वे बीमारोंको घर बैठे गंगा-सी यह दवा दें, तो अुनका धन्धा कैसे चले? अिसलिअे अुनकी दृष्टिमें तो अुनकी पुड़िया और शीशी ही रामबाण दवा है। अिस दवासे अुनका पेट भरता है और रोगीको हाथोंहाथ फल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भी देखनेको मिलता है। "फलां-फलांने मुझको चूरन दिया और मैं अच्छा हो गया।" कुछ लोग अैसा कहनेवाले निकल आते हैं और वैद्यका व्यापार चल पड़ता है।

वैद्यों और डॉक्टरोंके रामनाम रटनेकी सलाह देनेसे रोगीका दुःख दूर नहीं होता। जब वैद्य खुद अुसके चमत्कारको जानता है, तभी रोगीको भी अुसके चमत्कारका पता चल सकता है। रामनाम पोथीका बैंगन नहीं, वह तो अनुभवकी प्रसादी है। जिसने अुसका अनुभव प्राप्त किया है, वही यह दवा दे सकता है, दूसरा नहीं।

वैद्यराजने मुझे चार मंत्र लिखकर दिये हैं। अुनमें चरक ॠषिका मंत्र सीधा और सरल है। अुसका अर्थ यों है:

चराचरके स्वामी विष्णुके हजार नामोंमें से अेकका भी जप करनेसे सब रोग शान्त होते हैं।

विष्णुं सहस्रमूर्धानं चराचरपतिं विभुम्।
स्तुवन्नामसहस्रेण ज्वरान् सर्वान् व्यपोहति॥

—चरक चिकित्सा, अ० ३–श्लोक ३११

हरिजनसेवक, २४–३–१९४६

२२

सब रोगोंका अिलाज

गांधीजीने कहा—"अगर आप अपने दिलसे डरको दूर कर दें, तो मैं कहूंगा कि आपने मेरी बहुत मदद की। लेकिन वह कौनसी जादूअी चीज है, जो आपके अिस डरको भगा सकती है? वह है रामनामका अमोघ मंत्र। शायद आप कहेंगे कि रामनाममें आपको विश्वास नहीं, आप अुसे नहीं जानते। लेकिन अुसके बगैर आप अेक सांस भी नहीं ले सकते। अुसे आप चाहे अीश्वर कहिये, अल्लाह कहिये, गॉड कहिये, या अहुरमज़्द कहिये। दुनियामें जितने अिन्सान हैं, अुतने ही अुसके बेशुमार नाम हैं। विश्वमें अुसके जैसा दूसरा कोअी नहीं। वही अेक महान है, विभु है। दुनियामें अुससे बड़ा और कोअी नहीं। वह अनादि, अनन्त, निरंजन और निराकार है। मेरा राम अैसा है। अेक वही मेरा स्वामी और मालिक है।"
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांधीजीने रुंधे हुअे कंठसे अिस बातका जिक्र किया कि बचपनमें वे बहुत डरपोक थे और परछांहीसे भी डरा करते थे। अुन दिनों अुनकी धाय रंभाने अुन्हें डर भगानेके लिअे रामनामका मंत्र सिखाया था। अुन्होंने कहा — "रंभा मुझसे कहती कि 'जब डर मालूम हो, रामका नाम लिया करो। वह तुम्हारी रक्षा करेगा'। अुस दिनसे रामनाम सब तरहके डरोंके लिअे मेरा अचूक सहारा बन गया है।

"राम पवित्र लोगोंके दिलमें हमेशा रहता है। जिस तरह बंगालमें श्री चैतन्य और श्री रामकृष्णका नाम मशहूर है, अुसी तरह काश्मीरसे कन्याकुमारी तक हरअेक हिन्दू घर जिनके नामसे वाकिफ है, अुन भक्त-शिरोमणि तुलसीदासने अपने अमर महाकाव्य रामायणमें हमको रामनामका मंत्र दिया है। अगर आप रामनामसे डर कर चलें, तो दुनियामें आपको क्या राजा, क्या रंक, किसीसे डरनेकी जरूरत न रह जाय। 'अल्लाहो अकबर' की पुकारोंसे आपको क्यों डरना चाहिये? अिस्लामका अल्लाह तो बेगुनाहोंकी हिफाजत करनेवाला है। पूर्वी बंगालमें जो वारदातें हुअी हैं, अुन्हें पैगम्बर साहबका अिस्लाम मंजूर नहीं करता।

"अगर अीश्वरमें आपकी श्रद्धा है, तो किसकी ताकत है कि आपकी औरतों और लड़कियोंकी अिज्जत पर हाथ डाले? अिसलिअे मुझे अुम्मीद है कि आप लोग मुसलमानोंसे डरना छोड़ देंगे। अगर आप रामनाममें विश्वास करते हैं, तो आपको पूर्वी बंगाल छोड़नेकी बात नहीं सोचनी चाहिये। जहां आप पैदा हुअे और पले-पुसे, वहीं आपको रहना चाहिये और जरूरत पड़ने पर बहादुर मर्दों और औरतोंकी तरह अपनी आबरूकी हिफाजत करते हुअे वहीं मर जाना चाहिये। खतरेका सामना करनेके बदले अुससे दूर भागना अुस श्रद्धासे अिनकार करना है, जो मनुष्यकी मनुष्य पर, अीश्वर पर और अपने-आप पर रहती है। अपनी श्रद्धाका अैसा दिवाला निकालनेसे बेहतर तो यह है कि अिन्सान डूब कर मर जाय।

हरिजनसेवक, २४–११–१९४६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२३

कुदरती अिलाजमें रामनाम

प्राकृतिक अुपचारकके अिलाजोंमें सबसे समर्थ अिलाज रामनाम है। अिसमें अचम्भेकी कोअी बात नहीं। अेक मशहूर वैद्यने अभी अुस दिन मुझसे कहा था : 'मैंने अपनी सारी जिन्दगी मेरे पास आनेवाले बीमारोंको तरह-तरहकी दवाकी पुड़ियां देनेमें बिताअी है। लेकिन जब आपने शरीरके रोगोंको मिटानेके लिअे रामनामकी दवा बताअी, तब मुझे याद पड़ा कि चरक और वाग्भट जैसे हमारे पुराने धन्वन्तरियोंके वचनोंसे भी आपकी बातको पुष्टि मिलती है।' आध्यात्मिक रोगोंको (आधियोंको) मिटानेके लिअे रामनामके जपका अिलाज बहुत पुराने जमानेसे हमारे यहां होता आया है। लेकिन चूंकि बड़ी चीजमें छोटी चीज भी समा जाती है, अिसलिअे मेरा यह दावा है कि हमारे शरीरकी बीमारियोंको दूर करनेके लिअे भी राम-नामका जप सब अिलाजोंका अिलाज है। प्राकृतिक अुपचारक अपने बीमारसे यह नहीं कहेगा कि 'तुम मुझे बुलाओ तो मैं तुम्हारी सारी बीमारी दूर कर दूं।' वह तो बीमारको सिर्फ यह बतायेगा कि प्राणीमात्रमें रहनेवाला और सब बीमारियोंको मिटानेवाला तत्त्व कौनसा है। किस तरह अुस तत्त्वको जाग्रत किया जा सकता है, और कैसे अुसको अपने जीवनकी प्रेरक शक्ति बनाकर अुसकी मददसे अपनी बीमारियोंको दूर किया जा सकता है। अगर हिन्दुस्तान अिस तत्त्वकी ताकतको समझ जाय, तो हम आजाद तो हो ही जायें, लेकिन अुसके अलावा आज हमारा जो देश बीमारियों और कमजोर तबीयतवालोंका घर बन बैठा है, वह तन्दुरुस्त और ताकतवर शरीरवाले लोगोंका देश बन जाय।

रामनामकी शक्तिकी अपनी कुछ मर्यादा है और अुसके कारगर होनेके लिअे कुछ शर्तोंका पूरा होना जरूरी है। रामनाम कोअी जंतर-मंतर या जादू-टोना नहीं। जो लोग खा-खा कर खूब मोटे हो गये हैं, और जो अपने मुटापेकी और अुसके साथ बढ़नेवाली बादीकी आफतसे बच जानेके बाद फिर तरह-तरहके पकवानोंका मजा चखनेके लिअे अिलाजकी तलाशमें रहते हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अुनके लिअे रामनाम किसी कामका नहीं। रामनामका अुपयोग तो अच्छे कामके लिअे होता है। बुरे कामके लिअे हो सकता होता, तो चोर और डाकू सबसे बड़े भक्त बन जाते। रामनाम अुनके लिअे है, जो दिलके साफ हैं और जो दिलकी सफाअी करके हमेशा साफ-पाक रहना चाहते हैं। भोग-विलासकी शक्ति या सुविधा पानेके लिअे रामनाम कभी साधन नहीं बन सकता। बादीका अिलाज प्रार्थना नहीं, अुपवास है। अुपवासका काम पूरा होने पर ही प्रार्थनाका काम शुरू होता है, गोकि यह सच है कि प्रार्थनासे अुपवासका काम आसान और हलका बन जाता है। अिसी तरह अेक तरफसे आप अपने शरीरमें दवाकी बोतलें अुंडेला करें और दूसरी तरफ मुंहसे रामनाम लिया करें, तो वह बेमतलब मजाक ही होगा। जो डॉक्टर बीमारकी बुराअियोंको बनाये रखनेमें या अुन्हें सहेजनेमें अपनी होशियारीका अुपयोग करता है, वह खुद गिरता है और अपने बीमारको भी नीचे गिराता है।* अपने शरीरको अपने सिरजनहारकी पूजाके लिअे मिला हुआ अेक साधन समझनेके बदले अुसीकी पूजा करने और अुसको किसी भी तरह बनाये रखनेके लिअे पानीकी तरह पैसा बहानेसे बढ़कर बुरी गत और क्या हो सकती है? अिसके खिलाफ रामनाम रोगको मिटानेके साथ ही साथ आदमीको भी शुद्ध बनाता है और अिस तरह अुसको अूंचा अुठाता है। यही रामनामका अुपयोग है और यही अुसकी मर्यादा।

हरिजनसेवक, ७–४–१९४६

* हमें शरीरके बदले आत्माके चिकित्सकोंकी जरूरत है। अस्पतालों और डॉक्टरोंकी वृद्धि कोअी सच्ची सभ्यताकी निशानी नहीं है। हम अपने शरीरसे जितनी ही कम मोहब्बत करें, अुतना ही हमारे और सारी दुनियाके लिअे अच्छा है। — हिन्दी नवजीवन, ६–१०–१९२७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२४

आम लोगोंके लिअे अिलाज

"आपको यह जानकर खुशी होगी कि ४० बरससे भी पहले जब मैंने कुनेकी 'न्यू सायन्स ऑफ हीलिंग' और जुस्टकी 'रिटर्न टु नेचर' नामकी किताबें पढ़ीं, तभीसे मैं कुदरती अिलाजका पक्का हिमायती हो गया था। लेकिन मुझे यह कबूल करना चाहिये कि मैं 'रिटर्न टु नेचर' का पूरा-पूरा मतलब नहीं समझ सका हूं — अिसकी वजह मेरी अिच्छाकी कमी नहीं, बल्कि मेरे ज्ञानकी कमी है। अब मैं कुदरती अिलाजका अैसा तरीका खोजनेकी कोशिश कर रहा हूं, जो हिन्दुस्तानके करोड़ों गरीबोंको फायदा पहुंचा सके। मैं सिर्फ अैसे ही अिलाजके प्रचारकी कोशिश करता हूं, जो मिट्टी, पानी, धूप, हवा और आकाशके अिस्तेमालसे किया जा सके। अिस अिलाजसे मनुष्यको कुदरतन् यह बात समझमें आ जाती है कि दिलसे भगवानका नाम लेना ही सारी बीमारियोंका सबसे बड़ा अिलाज है। अिस भगवानको हिन्दुस्तानके कुछ करोड़ मनुष्य रामके नामसे जानते हैं और दूसरे कुछ करोड़ अल्लाहके नामसे पहचानते हैं। दिलसे भगवानका नाम लेनेवाले मनुष्यका यह फर्ज हो जाता है कि वह कुदरतके अुन नियमोंको समझे और अुनका पालन करे, जो भगवानने मनुष्यके लिअे बना दिये हैं। यह दलील हमें अिस नतीजे पर पहुंचाती है कि बीमारीका अिलाज करनेसे अुसे रोकना बेहतर है। अिसलिअे मैं लाजिमी तौर पर लोगोंको सफाअीके नियम समझाता हूं, यानी अुन्हें मन, शरीर और अुसके आसपासके वातावरणकी सफाअीका अुपदेश करता हूं।"

हरिजनसेवक, १५-६-१९४७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२५

रामबाण अुपाय

“आप जो भी कुछ लिखते हैं, मैं बड़े चावसे अुसका हरअेक श पढ़ता हूं। ‘हरिजन’ का नया अंक मिलने पर जब तक अुसे पूरा न प लूं, मैं रुक नहीं सकता। नतीजा अिसका यह होता है कि मेरे अन्दर अे अजीब खुदी पैदा हो जाती है, जो चाहती है कि मैं जिसकी पूजा करूं, व मेरी दृष्टिमें पूर्ण हो। कोअी भी अैसी चीज जिस पर विश्वास न ज मुझे बेचैन कर देती है। हालमें ही आपने लिखा है कि कुदरती अुपचार रामनाम शर्तिया अिलाज है। यह पढ़कर तो मैं बिलकुल भ्रममें पड़ ग हूं। आजके नौजवान अपनी सहनशीलताकी वजहसे आपकी बहुतसी बातों विरोध करना पसन्द नहीं करते। वे सोचते हैं: ‘गांधीजीने हमको अित सारी चीजें सिखाअी हैं, हमें अितना अूंचा अुठाया है कि जिसकी हम कल्प भी नहीं कर सकते थे। अिससे भी बढ़कर अुन्होंने हमें स्वराज्यके नजदी पहुंचा दिया है। अिसलिअे रामनामकी अुनकी अिस झकको हमें बरदा कर लेना चाहिये।’

“दूसरी चीजोंके साथ आपने कहा है: ‘कोअी भी व्याधि हो, अग मनुष्य हृदयसे रामनाम ले, तो व्याधि नष्ट होनी चाहिये।’ (हरिजनसेव ३-३-१९४६)

‘जिस चीजका मनुष्य पुतला बना है, अुसीसे हम अिलाज ढूंढ़ें। पुत पृथ्वी, पानी, आकाश, तेज और वायुका बना है। अिन पांच तत्त्वोंसे ज मिल सके सो लें।’ (हरिजनसेवक, ३-३-१९४६)

‘... और मेरा दावा है कि शारीरिक रोगोंको दूर करनेके लिअे रामनाम सबसे बढ़िया अिलाज है।’ (हरिजनसेवक, ७-४-१९४६)

“पहले-पहल जब कुदरती अुपचारमें आपने अिस चीजको दाखिल किय तो मैंने समझा कि आप श्रद्धाके आधार पर चलनेवाले मानसिक अुपचा (Psycho-Therapy) अथवा क्रिश्चियन-सायन्सको ही दूसरे शब्दोंमें रख हैं। अुपचारकी हरअेक प्रणालीमें अिनका अपना स्थान होता है। अूपर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने पहले अुद्धरणकी मैंने अिसी मानीमें व्याख्या की। अूपर दिये हुअे दूसरे वाक्यको समझना कठिन है। आखिरकार अिन पंच महाभूतोंके बिना, जिनका जिक्र करते हुअे आप कहते हैं कि सिर्फ वही अुपचारके साधन होने चाहिये, दवाअियोंका बनना भी तो नामुमकिन है।

"अगर आप श्रद्धा पर जोर देते हैं, तो मेरा कोअी झगड़ा नहीं। रोगीके लिअे जरूरी है कि वह अच्छा होनेके लिअे श्रद्धा भी रखे। लेकिन यह मान लेना मुश्किल है कि सिर्फ श्रद्धासे ही हमारे शारीरिक रोग भी दूर हो जायंगे। दो साल पहले मेरी छोटी लड़कीको 'अिन्फेण्टाअिल पैरेलिसिस' (Infantile Paralysis) हो गया था। अगर आजके नये तरीकोंसे अुसका अिलाज न किया जाता, तो बेचारी हमेशाके लिअे पंगु हो जाती। आप यह तो मानेंगे कि अेक ढाअी सालके बच्चेको 'अिन्फेण्टाअिल पैरेलिसिस' से मुक्त होनेके लिअे रामनामका जप बताकर हम अुसकी मदद नहीं कर सकते, और न अेक माताको अपने बच्चेके लिअे अकेले अेक रामनामका ही जप करनेको आप राजी कर सकते हैं।

"२४ मार्चके अंकमें आपने चरकका जो प्रमाण दिया है, अुससे मुझे कोअी प्रोत्साहन नहीं मिलता; क्योंकि आपने ही मुझे सिखाया है कि कोअी चीज कितनी ही पुरानी या प्रामाणिक क्यों न हो, अगर दिलको न जंचे तो अुसे नहीं मानना चाहिये।"

नौजवानोंके अेक अध्यापक अिस तरह लिखते हैं।

रामनाममें फेथ-हीलिंग (श्रद्धासे अिलाज करने) और क्रिश्चियन-सायन्सके* गुण होते हुअे भी वह अुनसे बिलकुल अलग है। रामनाम लेना तो

---

* अपनी आखिरी रोजकी बातचीतमें लॉर्ड लोथियनने क्रिश्चियन सायन्स अर्थात् अीसाअी-विज्ञानका जिक्र किया और अुस पर गांधीजीकी राय मांगी। गांधीजीने कहा — "मनुष्यका अीश्वरसे अटूट सम्बन्ध है। अिसलिअे मनुष्य जितने ही अंशोंमें अपने अिस सम्बन्धको पहचानेगा, अुतने ही अंशोंमें वह पाप और रोगसे मुक्त हो जायगा। श्रद्धासे मनुष्य जो अच्छा हो जाता है, अुसका रहस्य यही है। क्योंकि अीश्वर सत्य, स्वास्थ्य और प्रेम है।"

गांधीजीने आगे कहा—"और वह तो वैद्य भी है। मेरा अीसाअी-विज्ञानके साथ कोअी झगड़ा नहीं है। मैंने तो बरसों पहले जोहानिसबर्गमें कहा था कि मैं अुस सिद्धान्तको पूरी तरह मान सकता हूं। पर बहुतसे अीसाअी-वैज्ञानिकोंमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अुस सचाअीका अेक नमूना मात्र है, जिसके लिअे वह लिया जाता है। जिस वक्त कोअी आदमी बुद्धिपूर्वक अपने अन्दर अीश्वरका दर्शन करता है, अुसी वक्त वह अपनी शारीरिक, मानसिक और नैतिक सब व्याधियोंसे छूट जाता है। यह कहकर कि हमें प्रत्यक्ष जीवनमें कोअी अैसा आदमी नहीं मिलता, हम अिस बयानकी सचाअीको झूठ नहीं ठहरा सकते। हां, जिन लोगोंको अीश्वर पर विश्वास नहीं है, अुनके लिअे बेशक मेरी दलील बेकार है।

क्रिश्चियन साअिन्टिस्ट, फेथ-हीलर और साअिको-थेरेपिस्ट अगर चाहें तो रामनाममें छिपी सचाअीकी थोड़ी गवाही दे सकते हैं। मैं दलील देकर पाठकोंको ज्यादा नहीं बता सकता। जिसने कभी चीनी खाअी नहीं, अुसे कैसे समझायें कि चीनी मीठी होती है? अुसे तो चीनी चखनेके लिअे ही कह सकते हैं।

मेरी कोअी श्रद्धा नहीं है। बौद्धिक विश्वास होना अेक बात है, पर किसी चीजको हृदयसे श्रद्धापूर्वक ग्रहण कर लेना दूसरी बात है। मैं अिस विधानको मंजूर करता हूं कि रोगमात्र पापका परिणाम है। आदमीको अगर खांसी भी आती है, तो वह पापका ही फल है। मेरी अपनी अिस खूनके दबाववाली बीमारीका कारण भी अत्यधिक काम और चिन्ताका बोझ ही तो है। पर सवाल यह है कि मैंने क्यों अितना काम और चिन्ता की? अत्यधिक काम और जल्दबाजी भी तो पाप ही है। मैं यह भी खूब जानता हूं कि डॉक्टरोंसे बचना भी मेरे लिअे पूरी तरह सम्भव था। पर अीसाअी-विज्ञानने शारीरिक स्वास्थ्य और रोगवाले प्रश्नको जो अितना अधिक महत्त्व दे रखा है, वह मेरी समझमें नहीं आता।"

लॉर्ड लोथियनने कहा—"आदमी अगर अितना मान ले कि रोगमात्र पापका ही फल है तो काफी है। गीतामें भी तो कहा है न कि पंचेन्द्रियोंके विषयोंका मनुष्यको त्याग कर देना चाहिये, क्योंकि वे माया हैं। अीश्वर जीवन, प्रेम और स्वास्थ्य है।"

गांधीजी —"मैंने अिसे कुछ दूसरे शब्दोंमें रखा है। अीश्वर सत्य है क्योंकि हमारे धर्मग्रंथोंमें लिखा है कि सिवा सत्यके कुछ है ही नहीं। अिसीका अर्थ हुआ अीश्वर जीवन है। और अिसलिअे मैं कहता हूं कि सत्य और प्रेम अेक ही सिक्केकी दो बाजुअें हैं। और प्रेम वह जरिया है, जिसके द्वारा हम सत्यको प्राप्त कर सकते हैं, जो कि हमारा ध्येय है।"—
हरिजनसेवक,
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अिस पुण्य-नामका हृदयसे जप करनेके लिअे जो जरूरी शर्तें हैं, अुन्हें मैं यहां नहीं दोहराअूंगा।

चरकका प्रमाण अुन्हीं लोगोंके लिअे फायदेमन्द है, जो रामनाममें श्रद्धा और विश्वास रखते हैं। दूसरे लोगोंको हक है कि वे अुस पर विचार न करें।

बच्चे गैर-जिम्मेदार होते हैं। बेशक रामनाम अुनके लिअे नहीं है। वे तो मां-बापकी दया पर जीनेवाले बेबस जीव हैं। अिससे हमें पता चलता है कि मां-बापकी बच्चोंके और समाजके प्रति कितनी भारी जिम्मेदारी है। मैं अुन मां-बापोंको जानता हूं, जिन्होंने अपने बच्चोंके रोगोंके बारेमें लापरवाही की है, और यहां तक समझ लिया है कि हमारे रामनाम लेनेसे ही वे अच्छे हो जायंगे।

आखिरमें, सब दवाअियां पंच महाभूतोंसे बनी हैं, यह दलील देना विचारोंकी अराजकता जाहिर करता है। मैंने सिर्फ अिसलिअे अुसकी तरफ अिशारा किया है कि वह दूर हो जाय।

हरिजनसेवक, २८–४–१९४६

२६

आयुर्वेद और कुदरती अुपचार

अीश्वरकी स्तुति और सदाचारका प्रचार हर तरहकी बीमारीको रोकनेका अच्छे-से-अच्छा और सस्ते-से-सस्ता अिलाज है। मुझे अिसमें जरा भी शक नहीं। अफसोस अिस बातका है कि वैद्य, हकीम और डॉक्टर अिस सस्ते अिलाजका अुपयोग ही नहीं करते। बल्कि हुआ यह है कि अुनकी किताबोंमें अिस अिलाजकी कोअी जगह ही नहीं रही, और कहीं है तो अुसने जन्तर-मन्तरकी शकल अख्तियार करके लोगोंको वहमके कुअेंमें ढकेला है। अीश्वरकी स्तुति या रामनामको वहमसे कोअी निस्बत नहीं। यह कुदरतका सुनहला कानून है। जो अिस पर अमल करता है, वह बीमारीसे बचा रहता है। जो अमल नहीं करता, वह बीमारियोंसे घिरा रहता है। तन्दुरुस्त रहनेका जो कानून है, वही बीमार होनेके बाद बीमारीसे छुटकारा पानेका भी कानून है। सवाल यह होता है कि जो रामनाम जपता है और [illegible] रहता है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अुसको बीमारी हो ही क्यों? सवाल ठीक ही है। आदमी स्वभावसे ही अपूर्ण है। समझदार आदमी पूर्ण बननेकी कोशिश करता है। लेकिन पूर्ण वह कभी बन नहीं पाता, असलिअे अनजाने गलतियां करता है। सदाचारमें अीश्वरके बनाये सभी कानून समा जाते हैं, लेकिन अुसके सब कानूनोंको जानने-वाला संपूर्ण पुरुष हमारे पास नहीं है। मसलन्, अेक कानून यह है कि हदसे ज्यादा काम न किया जाय। लेकिन कौन बतावे कि यह हद कहां खतम होती है? यह चीज तो बीमार पड़ने पर ही मालूम होती है। मिताहार और युक्ताहार यानी कम और जरूरतके मुताबिक खाना कुदरतका दूसरा कानून है। कौन बतावे कि असकी हद कब लांघी जाती है? मैं कैसे जानूं कि मेरे लिअे युक्ताहार क्या है? अैसी तो कअी बातें सोची जा सकती हैं। अिस सबका निचोड़ यही है कि हर आदमीको अपना डॉक्टर खुद बनकर अपने अूपर लागू होनेवाले कानूनका पता लगा लेना चाहिये। जो अिसका पता लगा सकता है और अुस पर अमल कर सकता है, वह १२५ बरस जीयेगा ही।

श्री वल्लभराम वैद्य पूछते हैं कि मामूली मसाले और पाक वगैरा चीजें कुदरती अिलाजमें शुमार की जा सकती हैं या नहीं? यह अेक बड़े कामका सवाल है। डॉक्टर दोस्तोंका यह दावा है कि वे पूरी तरह कुदरती अिलाज करनेवाले हैं। क्योंकि दवायें जितनी भी हैं, सब कुदरतने ही बनाअी हैं। डॉक्टर तो अुनकी नअी मिलावटें भर करते हैं। अिसमें बुरा क्या है? अिस तरह हर चीज पेश की जा सकती है। मैं तो यही कहूंगा कि राम-नामके सिवा जो कुछ भी किया जाता है, वह कुदरती अिलाजके खिलाफ है। अिस मध्यबिन्दुसे हम जितने दूर हटते हैं, अुतने ही असल चीजसे दूर जा पड़ते हैं। अिस तरह सोचते हुअे मैं यह कहूंगा कि पांच महाभूतोंका असल अुपयोग कुदरती अिलाजकी हद है। अिससे आगे बढ़नेवाला वैद्य अपने अिर्द-गिर्द जो दवायें अुगती हों या अुगाअी जा सकें, अुनका अिस्तेमाल सिर्फ लोगोंके भलेके लिअे करे, पैसे कमानेके लिअे नहीं, तो वह भी कुदरती अिलाज करनेवाला कहला सकता है। अैसे वैद्य आज कहां हैं? आज तो वे पैसा कमानेकी होड़ा-होड़ीमें पड़े हैं। छानबीन और खोज-अीजाद कोअी करता नहीं। अुनके आलस और लोभकी वजहसे आयुर्वेद आज कंगाल बन गया है।

हरिजनसेवक, १९-५-१९४६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अुरुळीकांचनमें

पहले ही दिन गांवके बाहर सामूहिक प्रार्थना की गअी और दूसरी जगहोंकी तरह यहां भी सबके अेक साथ रामधुन गानेका रिवाज शुरू किया गया। प्रार्थनामें जो भजन गाया गया था, अुसका आधार लेकर गांधीजीने वहां आये हुअे गांवके लोगोंके सामने शरीरकी बीमारियोंको मिटानेवाली बढ़ियासे बढ़िया कुदरती दवाके रूपमें रामनाम पेश किया: "अभी हमने जो भजन गाया, अुसमें भक्त कहता है: 'हरि! तुम हरो जनकी पीर।' यानी हे भगवान तू अपने भक्तोंका दुःख दूर कर। अिसमें जिस दुःखकी बात कही गअी है, वह सब तरहके दुःखोंसे सम्बन्ध रखती है। मन या तनकी किसी खास बीमारीकी चर्चा अिसमें नहीं है।" फिर गांधीजीने लोगोंको कुदरती अिलाजकी सफलताके नियम बताये: "रामनामके प्रभावका आधार अिस बात पर है कि आपकी अुसमें सजीव श्रद्धा है या नहीं। अगर आप गुस्सा करते हैं, सिर्फ शरीरकी हिफाजतके लिअे नहीं, बल्कि मौज-शौकके लिअे खाते और सोते हैं, तो समझिये कि आप रामनामका सच्चा अर्थ नहीं जानते। अिस तरह जो रामनाम जपा जायगा, अुसमें सिर्फ होंठ हिलेंगे, दिल पर अुसका कोअी असर न होगा। रामनामका फल पानेके लिअे आपको जपते समय अुसमें लीन हो जाना चाहिये, और अुसका प्रभाव आपके जीवनके तमाम कामोंमें दिखाअी पड़ना चाहिये।"

पहले बीमार

दूसरे दिन सुबहसे बीमार आने लगे। कोअी ३० होंगे। गांधीजीने अुनमें से पांच या छहको देखा और अुन सबकी बीमारीके प्रकारको देखकर थोड़े हेरफेरके साथ सबको अेकसे ही अिलाज सुझाये। मसलन्, रामनामका जप, सूर्यस्नान, बदनको जोरसे रगड़ना या घिसना, कटिस्नान, दूध, छाछ, फल, फलोंका रस और पीनेके लिअे साफ और ताजा पानी। शामकी प्रार्थना-सभामें अुन्होंने अपने विषयको समझाते हुअे कहा: "सचमुच यह पाया गया है कि मन और शरीरकी तमाम आधि-व्याधियोंका अेक ही समान कारण है। अिसलिअे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अुन सबका अेक ही आम अिलाज भी हो, तो अुसमें अचरजकी कोअी बात नहीं। रोगोंकी तरह अिलाज भी अेक ही ढंगके हो सकते हैं। अिसलिअे आज सुबह मेरे पास जितने बीमार आये थे, अुन सबको मैंने रामनामके साथ करीब-करीब अेकसा ही अिलाज सुझाया था। लेकिन अपने रोजमर्राके जीवनमें जब शास्त्र हमें अनुकूल नहीं होते, तो हम अुनके वचनोंका मन-चाहा अर्थ निकालकर अपना काम चला लेते हैं। मनुष्यने अिस कलाका अच्छा विकास कर लिया है। हमने अपने मन पर अेक अैसे भ्रम या वहमको सवार होने दिया है कि शास्त्रोंका अुपयोग सिर्फ अिसलिअे है कि अगले जन्ममें जीवका आध्यात्मिक कल्याण हो और धर्मका पालन अिसलिअे करना है कि मरनेके बाद पुण्यकी यह कमाअी काम आ सके। मेरा मत अैसा नहीं है। अगर अिस जीवनके व्यवहारमें धर्मका कोअी अुपयोग न हो, तो अगले जन्ममें मुझे अुससे क्या निस्बत हो सकती है?

"अिस दुनियामें बिरला ही कोअी अैसा होगा, जो शरीर और मनकी सभी बीमारियोंसे बिलकुल बरी हो। तन और मनकी कुछ बीमारियां तो अैसी हैं, जिनका अिस दुनियामें कोअी अिलाज ही नहीं। जैसे, अगर शरीरका कोअी अंग खंडित हो गया हो, तो अुसको फिरसे पैदा कर देनेका चमत्कार रामनाममें कहांसे आये? लेकिन अुसमें अिससे भी बड़ा चमत्कार कर दिखानेकी ताकत है। वह अंग-भंग या बीमारियोंके बावजूद सारी जिन्दगी अटूट शान्तिके* साथ बितानेकी शक्ति देता है और अुमर पूरी होने पर जिस जगह सबको जाना पड़ता है, वहां जानेकी बारी आने पर मौतके दुःखको और चिताकी विजयके डरको मिटा देता है, यह क्या कोअी छोटा-मोटा चमत्कार है? जब आगे-पीछे मौत आने ही वाली है, तो वह कब आयेगी, अिस फिकरमें हम पहलेसे ही क्यों मरें?"

कुदरती अिलाजके मूल तत्त्व

"मनुष्यका भौतिक शरीर पृथ्वी, पानी, आकाश, तेज और वायु नामके पांच तत्त्वोंसे बना है, जो पंच महाभूत कहलाते हैं। अिनमें से तेज तत्त्व शरीरको शक्ति पहुंचाता है। आत्मा अुसको चैतन्य प्रदान करती है।

---

* रामनाम जैसी शान्ति प्रदान करनेवाली दूसरी कोअी शक्ति नहीं है। — प्रेस रिपोर्ट, १०-१-१९४६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अिन सबमें सबसे जरूरी चीज हवा है। आदमी बिना खाये कअी हफ्तों तक जी सकता है, पानीके बिना भी वह कुछ घण्टे बिता सकता है, लेकिन हवाके बिना तो कुछ ही मिनटोंमें अुसकी देहका अन्त हो सकता है। अिसीलिअे अीश्वरने हवाको सबके लिअे सुलभ बनाया है। अन्न और पानीकी तंगी कभी-कभी पैदा हो सकती है, हवाकी कभी नहीं। अैसा होते हुअे भी हम बेवकूफोंकी तरह अपने घरोंके अन्दर खिड़की और दरवाजे बन्द करके सोते हैं और अीश्वरकी प्रत्यक्ष प्रसादी-सी ताजी और साफ हवासे फायदा नहीं अुठाते। अगर चोरोंका डर लगता है, तो रातमें अपने घरोंके दरवाजे और खिड़कियां बन्द रखिये, लेकिन खुद अपनेको अुनमें बन्द रखनेकी क्या जरूरत है?

"साफ और ताजी हवा पानेके लिअे आदमीको खुलेमें सोना चाहिये। लेकिन खुलेमें सोकर धूल और गन्दगीसे भरी हवा लेनेका कोअी मतलब नहीं। अिसलिअे आप जिस जगह सोयें, वहां धूल और गन्दगी नहीं होनी चाहिये। धूल और सरदीसे बचनेके लिअे कुछ लोग सिरसे पैर तक ओढ़ लेनेके आदी होते हैं। यह तो बीमारीसे भी बदतर अिलाज हुआ। दूसरी बुरी आदत मुंहसे सांस लेनेकी है। नथनोंकी राह फेफड़ोंमें पहुंचनेवाली हवा छनकर साफ हो जाती है, और अुसे जितना गरम होना चाहिये अुतनी गरम भी वह हो लेती है।

"जो आदमी जहां चाहे वहां और जिस तरह चाहे अुस तरह थूक कर, कूड़ा-करकट डालकर या गन्दगी फैलाकर या दूसरे तरीकोंसे हवाको गन्दी करता है, वह कुदरतका और मनुष्योंका गुनहगार है। मनुष्यका शरीर अीश्वरका मंदिर है। अुस मन्दिरमें जानेवाली हवाको जो गन्दी करता है, वह मन्दिरको भी बिगाड़ता है। अुसका रामनाम लेना फजूल है।"

हरिजनसेवक, ७–४–१९४६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२८

अुरुळीकांचनमें कुदरती अुपचार

कुदरती अुपचारके दो पहलू हैं: अेक ओीश्वरकी शक्ति यानी रामनामसे दर्द मिटाना और दूसरा, अैसे अुपाय करना कि दर्द पैदा ही न हो सके। मेरे साथी लिखते हैं कि कांचन गांवके लोग गांवको साफ रखनेमें मदद देते हैं। जिस जगह शरीर-सफाअी, घर-सफाअी और ग्राम-सफाअी हो, युक्ताहार हो और योग्य व्यायाम हो, वहां कम-से-कम बीमारी होती है। और अगर चित्तशुद्धि भी हो, तो कहा जा सकता है कि बीमारी असम्भव हो जाती है। रामनामके बिना चित्तशुद्धि नहीं हो सकती। अगर देहातवाले अितनी बात समझ जायं, तो वैद्य, हकीम या डॉक्टरकी जरूरत न रह जाय।

कांचन गांवमें गायें नामको ही हैं। अिसे मैं कमनसीबी मानता हूं। कुछ भैंसें हैं, लेकिन मेरे पास जितने प्रमाण हैं, वे बताते हैं कि गाय सबसे ज्यादा अुपयोगी प्राणी है। गायका दूध भी खानेमें आरोग्यप्रद है और गायका जो अुपयोग किया जा सकता है, वह भैंसका कभी नहीं किया जा सकता। मरीज़ोंके लिअे तो वैद्य लोग गायके दूधका ही अुपयोग बतलाते हैं। अिसलिअे मैं अुम्मीद रखूंगा कि कांचनवासी अुरुळीमें गायोंका अेक जूथ रखेंगे, जिससे सब लोगोंको गायका ताजा और साफ दूध मिल सके। सेहत अच्छी रखनेके लिअे दूधकी बहुत ज्यादा जरूरत रहती है।

कुदरती अुपचारके गर्भमें यह बात रही है कि मानव-जीवनकी आदर्श रचनामें देहातकी या शहरकी आदर्श रचना आ ही जाती है और अुसका मध्यबिन्दु तो ओीश्वर ही हो सकता है।

हरिजनसेवक, २६–५–१९४६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२९

गरीबोंके लिअे कुदरती अिलाज

कुदरती अुपचारमें जीवन-परिवर्तनकी बात आती है। यह कोअी वैद्यकी दी हुअी पुड़िया लेनेकी बात नहीं है, और न अस्पताल जाकर मुफ्त या फीस देकर दवा लेने या अुसमें रहनेकी ही बात है। जो मुफ्त दवा लेता है, वह भिक्षुक बनता है। जो कुदरती अुपचार करता है, वह कभी भी भिक्षुक नहीं बनता। वह अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाता है और अच्छा बननेका अुपाय खुद ही कर लेता है। वह अपने शरीरमें से जहर निकालकर अैसी कोशिश करता है कि जिससे दुबारा बीमार न पड़ सके।

कुदरती अिलाजमें मध्यबिन्दु तो रामनाम ही है न? रामनामसे आदमी सब रोगोंसे सुरक्षित बनता है। शर्त यह है कि नाम भीतरसे निकलना चाहिये। और, रामनामके भीतरसे निकलनेके लिअे नियम-पालन जरूरी हो जाता है। अुस हालतमें मनुष्य रोग-रहित होता है। अिसमें न कष्टकी बात है, न खर्चकी। मोसम्बी खाना अुपचारका अनिवार्य अंग नहीं है।

पथ्य खाना — युक्ताहार लेना — अवश्य अनिवार्य अंग है। हमारे देहात हमारी तरह ही कंगाल हैं। देहातमें साग-सब्जी, फल, दूध वगैरा पैदा करना कुदरती अिलाजका खास अंग है। अिसमें जो वक्त खर्च होता है, वह व्यर्थ तो जाता ही नहीं; बल्कि अुससे सभी देहातियोंको और आखिरकार सारे हिन्दुस्तानको लाभ होता है।

हरिजनसेवक, २–६–१९४६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुदरती अिलाज और आधुनिक अिलाज

मेरा कुदरती अिलाज तो सिर्फ गांववालोंके और गांवोंके लिअे ही है। अिसलिअे अुसमें खुर्दबीन, अेक्सरे वगैराकी कोअी जगह नहीं। और न कुदरती अिलाजमें कुनैन, अेमिटिन, पेनिसिलिन-जैसी दवाअियोंकी ही गुंजाअिश है। अुसमें अपनी सफाअी, घरकी सफाअी, गांवकी सफाअी और तन्दुरुस्तीकी हिफाजतका पहला स्थान है। और अितना करना काफी है। अिसकी तहमें खयाल यह है कि अगर हर आदमी अिस कलामें निष्णात हो सके, तो कोअी बीमारी ही न हो। और, बीमारी आ जाय तो अुसे मिटानेके लिअे कुदरतके सभी कानूनों पर अमल करनेके साथ साथ रामनाम ही असल अिलाज है। यह अिलाज सार्वजनिक या आम नहीं हो सकता। जब तक खुद अिलाज करनेवालेमें रामनामकी सिद्धि न आ जाय, तब तक रामनाम-रूपी अिलाजको अेकदम आम नहीं बनाया जा सकता। लेकिन पंचमहाभूतोंमें से यानी पृथ्वी, पानी, आकाश, तेज और हवामें से जितनी शक्ति ली जा सके, अुतनी लेकर रोग मिटानेकी यह अेक कोशिश है, और मेरे खयालमें कुदरती अिलाज यहीं खतम हो जाता है। अिसलिअे आजकल अुरुळीकांचनमें जो प्रयोग चल रहा है, वह गांववालोंको तन्दुरुस्तीकी हिफाजत करनेकी कला सिखाने और बीमारोंकी बीमारीको पंचमहाभूतोंकी मददसे मिटानेका प्रयोग है। जरूरत मालूम होने पर अुरुळीमें मिलनेवाली जड़ी-बूटियोंका अिस्तेमाल किया जा सकता है, और पथ्य-परहेज तो कुदरती अिलाजका जरूरी हिस्सा है ही।

हरिजनसेवक, ११–८–१९४६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पश्चिमकी ओर नजर न रखें

हमें अपना यह वहम दूर करना होगा कि जो कुछ करना है, अुसके लिअे पश्चिमकी तरफ नजर दौड़ाने पर ही आगे बढ़ा जा सकता है। अगर कुदरती अिलाज सीखनेके लिअे पश्चिम जाना पड़े, तो मैं नहीं मानता कि वह अिलाज हिन्दुस्तानके कामका होगा। यह अिलाज तो सबके घरमें मौजूद है। हमेशा कुदरती अिलाज करनेवालेकी राय लेनेकी जरूरत भी न रहनी चाहिये। वह अितनी आसान चीज है कि हरअेक आदमीको अुसे सीख लेना चाहिये। अगर रामनाम लेना सीखनेके लिअे विलायत जाना जरूरी हो, तब तो हम कहींके भी न रहें। रामनामको मैंने अपनी कल्पनाके कुदरती अिलाजकी बुनियाद माना है। अिसी तरह यह सहज ही समझमें आने लायक है कि पृथ्वी, पानी, आकाश, तेज और वायुके अिलाजके लिअे समुद्र पार जानेकी जरूरत हो ही नहीं सकती। दूसरा जो कुछ सीखना है वह यहीं है— गांवोंमें मौजूद है। देहाती दवायें, जड़ी-बूटियां, दूसरे देशोंमें नहीं मिलेंगी। वे तो आयुर्वेदमें ही हैं। अगर आयुर्वेदवाले धूर्त हों, तो पश्चिम जाकर आनेसे वे कुछ भले नहीं बन जायंगे। शरीर-शास्त्र पश्चिमसे आया है। सब कोअी कबूल करेंगे कि अुसमें से बहुत कुछ सीखने लायक है। लेकिन अुसे सीखनेके बहुतसे जरिये अिस मुल्कमें मिल सकते हैं। मतलब यह कि पश्चिममें जो कुछ अच्छा है, वह अैसा है और होना चाहिये कि सब जगह मिल सके। साथ ही, यहां यह भी कह देना जरूरी है कि कुदरती अिलाज सीखनेके लिअे यह बिलकुल जरूरी नहीं कि शरीर-शास्त्र सीखा ही जाय।

कुने, जुस्ट, फादर क्नेअिप वगैरा लोगोंने जो लिखा है, सो सबके लिअे है और सब जगहोंके लिअे है। वह सीधा है। अुसे जानना हमारा धर्म है। कुदरती अिलाज जाननेवालोंके पास अुसकी थोड़ी-बहुत जानकारी होती है, और होनी चाहिये। कुदरती अिलाज अभी गांवोंमें तो दाखिल हुआ ही नहीं है। अुस शास्त्रमें हम गहरे पैठे ही नहीं हैं। करोड़ोंको ध्यानमें रखकर अुस पर सोचा नहीं गया है। अभी वह शुरू ही हुआ है। आखिर वह कहां जाकर रुकेगा, सो कोअी कह नहीं सकता। सभी शुभ साहसोंकी तरह अुसके पीछे भी तपकी ताकत जरूरी है। नजर पश्चिमकी ओर न जाय, बल्कि अपने अन्दर जाय।

हरिजनसेवक, २–६–१९४६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुदरतके नियम

स० —— आपके सुझावके मुताबिक रामनामका —— सच्चिदानन्दके नामका —— मेरा जप चालू है। और अुससे मेरी क्षयकी बीमारीमें सुधार भी होने लगा है। यह सही है कि साथमें डॉक्टरी अिलाज भी चल रहा है। लेकिन आप कहते हैं कि युक्ताहार और मिताहारसे मनुष्य बीमारियोंसे दूर रहकर अपनी अुमर बढ़ा सकता है। मैं तो पिछले २५ बरससे मिताहारी रहता आया हूं, फिर भी आज अैसी बीमारीका भोग बना हुआ हूं। अिसे क्या पहले जन्म या अिस जन्मकी कमनसीबी कहा जाय?

आप यह भी कहते हैं कि मनुष्य १२५ बरस जी सकता है। स्वर्गीय महादेवभाअीकी आपको बड़ी जरूरत थी, यह जानते हुअे भी भगवानने अुन्हें अुठा लिया। युक्ताहारी और मिताहारी महादेवभाअी आपको अीश्वर-स्वरूप मानकर जीते थे, फिर भी वे खूनके दबावकी बीमारी (ब्लड-प्रेशर) के शिकार बनकर सदाके लिअे चल बसे। भगवानका अवतार माने जानेवाले रामकृष्ण परमहंस क्षय जैसी कैन्सरकी खतरनाक बीमारीके शिकार होकर कैसे मर गये? वे भी कैन्सरका सामना क्यों न कर सके?

ज० —— मैं तो स्वास्थ्यकी हिफाजतके जो नियम खुद जानता हूं वही बताता हूं। लेकिन मिताहार या युक्ताहार किसे माना जाय, यह हरअेक आदमीको जानना चाहिये। अिस बारेमें जिसने बहुतसा साहित्य पढ़ा हो और बहुत विचार किया हो, वह खुद भी अिसे जान सकता है। लेकिन अिसके यह मानी नहीं कि अैसा ज्ञान या जानकारी शुद्ध और पूरी है। अिसीलिअे कुछ लोग जिन्दगीको प्रयोगशाला कहते हैं। कअी लोगोंके तजरबोंको अिकट्ठा करना चाहिये और अुनमें से जानने लायक बातको लेकर आगे बढ़ना चाहिये। लेकिन अैसा करते हुअे अगर कामयाबी न मिले, तो भी किसीको दोष नहीं दिया जा सकता। खुदको भी दोषी नहीं कहा जा सकता। नियम गलत है, यह कहनेकी भी अेकदम हिम्मत न करनी चाहिये। लेकिन अगर हमारी बुद्धिको कोअी नियम गलत मालूम हो, तो सही नियम कौनसा है यह बतानेकी ताकत अपनेमें पैदा करके अुसका प्रचार करना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आपकी क्षयकी बीमारीके कअी कारण हो सकते हैं। यह भी कौन कह सकता है कि पंच महाभूतोंका आपने जरूरतके मुताबिक अुपयोग किया या नहीं? अिसलिअे जहां तक मैं कुदरतके नियमोंको जानता हूं और अुन्हें सही मानता हूं, वहां तक मैं तो आपसे यही कहूंगा कि कहीं-न-कहीं पंच महाभूतोंका अुपयोग करनेमें आपने भूल की है। महादेव और रामकृष्ण परमहंसके बारेमें आपने जो शंका अुठाअी, अुसका जवाब भी मेरी अूपरकी बातमें आ जाता है। कुदरतके नियमको गलत कहनेके बजाय यह कहना ज्यादा युक्तिसंगत मालूम होता है कि अिन्होंने भी कहीं-न-कहीं भूल की होगी। नियम कोअी मेरा बनाया हुआ नहीं है, वह तो कुदरतका नियम है; कअी अनुभवी लोगोंने अिसे कहा है। और अिसी बातको मानकर मैं चलनेकी कोशिश करता हूं। आखिरकार मनुष्य अपूर्ण प्राणी है। और कोअी अपूर्ण मनुष्य अिसे कैसे जान सकता है? डॉक्टर अिसे नहीं मानते। मानते भी हैं तो अुसका दूसरा अर्थ करते हैं। अिसका मुझ पर कोअी असर नहीं होता। नियमकी अैसी ताअीद करने पर भी मेरे कहनेका यह मतलब नहीं होता, न निकाला जाना चाहिये कि अिससे अूपरके किसी व्यक्तिका महत्त्व कम होता है।

हरिजनसेवक, ४–८–१९४६

३३

विश्वास-चिकित्सा* और रामनाम

अेक दोस्त अुलाहना देते हुअे लिखते हैं:

“क्या आपका कुदरती अिलाज और विश्वास-चिकित्सा कुछ मिलती-जुलती चीजें हैं? बेशक मरीजको अिलाजमें श्रद्धा तो होनी चाहिये, लेकिन कअी अैसे अिलाज हैं जो सिर्फ विश्वाससे ही रोगीको अच्छा कर देते हैं; जैसे, माता (चेचक), पेटका दर्द वगैरा बीमारियोंके। शायद आप जानते हों कि माताका, खासकर दक्षिणमें,[1] कोअी अिलाज नहीं किया जाता। अिसे सिर्फ अीश्वरकी माया मान लिया जाता है।

* जिस अिलाजकी नींव विश्वास पर हो।

१ मद्रास राज्य।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हम मरिअम्मा देवीकी पूजा करते हैं और बहुतसे रोगी अच्छे हो जाते हैं। यह चीज अेक करामात-सी लगती है। जहां तक पेट-दर्दकी बात है, बहुतसे लोग तिरुपतिमें देवीकी मन्नतें मानते हैं। अच्छे होने पर अुसकी मूर्तिके हाथ-पांव धोते हैं, और दूसरी मानी हुअी मन्नतें पूरी करते हैं। मेरी ही मांकी मिसाल लीजिये। अुनको पेटमें दर्द रहता था। पर तिरुपति हो आनेके बाद अुनकी वह तकलीफ दूर हो गअी।

"कृपा करके अिस बात पर रोशनी डालिये और यह भी कहिये कि कुदरती अिलाज पर भी लोग अैसा ही विश्वास क्यों न रखें? अिससे डॉक्टरोंका बार-बारका खर्च बच जायगा, क्योंकि चॉसरके कहनेके मुताबिक डॉक्टरका तो काम ही है कि वह दवाअी बेचनेवालेसे मिलकर बीमारको हमेशा बीमार बनाये रखे।"

जो मिसालें अूपर दी गअी हैं, वे न तो कुदरती अिलाजकी ही हैं और न रामनामकी ही, जिसको मैंने अिसमें शामिल किया है। अुनसे यह पता जरूर चलता है कि कुदरत बहुतसे रोगियोंको बिना किसी अिलाजके भी अच्छा कर देती है। ये मिसालें यह भी दिखाती हैं कि हिन्दुस्तानमें वहम हमारी जिन्दगीका कितना बड़ा हिस्सा बन गया है। कुदरती अिलाजका मध्यबिन्दु यानी रामनाम तो वहमका दुश्मन है। जो बुराअी करनेसे झिझकते नहीं, वे रामनामका नाजायज फायदा अुठायेंगे। पर वे तो हर चीज या हर अुसूलके साथ अैसा ही करेंगे। खाली जबानसे रामनाम रटनेसे अिलाजका कोअी सम्बन्ध नहीं। अगर मैं ठीक समझा हूं, तो जैसा कि लेखकने बताया है, विश्वास-चिकित्सामें यह माना जाता है कि रोगी अन्ध-विश्वाससे अच्छा हो जाता है। यह मानना तो अीश्वरके नामकी हंसी अुड़ाना है। रामनाम सिर्फ कल्पनाकी चीज नहीं, अुसे तो दिलसे निकलना है। परमात्मामें ज्ञानके साथ विश्वास हो और अुसके साथ-साथ कुदरतके नियमोंका पालन किया जाय, तभी किसी दूसरी मददके बिना रोगी बिलकुल अच्छा हो सकता है। अुसूल यह है कि शरीरकी सेहत तभी बिलकुल अच्छी हो सकती है, जब मनकी सेहत पूरी-पूरी ठीक हो। और मन पूरा-पूरा ठीक तभी होता है, जब दिल पूरा-पूरा ठीक हो। यह वह दिल नहीं, जिसे डॉक्टर छाती जांचनेके यंत्र (स्टेथोस्कोप) से देखते हैं, बल्कि वह दिल है जो अीश्वरका घर है। कहा जाता है कि अगर कोअी अपने अन्दर परमात्माको पहचान ले, तो अेक भी ... ... मनमें नहीं आ सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहां विचार शुद्ध हों, वहां बीमारी आ ही नहीं सकती। अैसी हालतको पहुंचना शायद कठिन हो, पर अिस बातको समझ लेना सेहतकी पहली सीढ़ी है। दूसरी सीढ़ी है, समझनेके साथ-साथ कोशिश भी करना। जब किसीके जीवनमें यह बुनियादी परिवर्तन आता है, तो अुसके लिअे स्वाभाविक हो जाता है कि वह अुसके साथ-साथ कुदरतके अुन तमाम कानूनोंका पालन भी करे, जो आज तक मनुष्यने ढूंढ़ निकाले हैं। जब तक अुनकी अुपेक्षा की जाय, तब तक कोअी यह नहीं कह सकता कि अुसका हृदय पवित्र है। यह कहना गलत न होगा कि अगर किसीका हृदय पवित्र है, तो अुसकी सेहत रामनाम न लेते हुअे भी अुतनी ही अच्छी रह सकती है। बात सिर्फ यह है कि सिवा रामनामके पवित्रता पानेका और कोअी तरीका मुझे मालूम नहीं। दुनियामें हर जगह पुराने ॠषि भी अिसी रास्ते पर चले हैं। और वे तो भगवानके बन्दे थे, कोअी वहमी या ढोंगी आदमी नहीं।

अगर अिसीका नाम 'क्रिश्चियन सायन्स' है, तो मुझे कुछ कहना नहीं है। मैं यह थोड़े ही कहता हूं कि रामनाम मेरी ही शोध है। जहां तक मैं जानता हूं, रामनाम तो अीसाअी धर्मसे भी पुराना है।

अेक भाअी पूछते हैं कि क्या रामनाममें ऑपरेशनकी अिजाजत नहीं? क्यों नहीं? अेक टांग अगर दुर्घटनामें कट गअी है, तो रामनाम अुसे थोड़े ही वापस ला सकता है। लेकिन बहुतसी हालतोंमें ऑपरेशन जरूरी नहीं होता। मगर जहां जरूरी हो वहां करवा लेना चाहिये। सिर्फ अितनी बात है कि अगर भगवानके किसी बन्देका हाथ-पांव जाता रहे, तो वह अिसकी चिन्ता नहीं करेगा। रामनाम कोअी अटकलपच्चू तजवीज नहीं है, और न कोअी कामचलाअू चीज ही।

हरिजनसेवक, ९–६–१९४६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामनामके बारेमें भ्रम

अेक मित्र लिखते हैं:

"आपने रामनामसे मलेरियाका अिलाज सुझाया। मेरी मुश्किल यह है कि जिस्मानी बीमारियोंके लिअे रूहानी ताकत पर भरोसा करना मेरी समझसे बाहर है। मैं पक्की तरहसे यह भी नहीं जानता कि आया मुझे अच्छा होनेका हक भी है या नहीं। और क्या अैसे वक्त जब मेरे देशवाले अितने दुःखमें पड़े हैं, मेरा अपनी मुक्तिके लिअे प्रार्थना करना ठीक होगा? जिस दिन मैं रामनाम समझ जाअूंगा, अुस दिन मैं अुनकी मुक्तिके लिअे प्रार्थना करूंगा। नहीं तो मैं अपने-आपको आजसे ज्यादा खुदगरज महसूस करूंगा।"

मैं मानता हूं कि यह दोस्त सत्यके सच्चे तलाश करनेवाले हैं। अुनकी अिस मुश्किलकी खुल्लमखुल्ला चर्चा मैंने अिसलिअे की है कि अुन जैसे बहुतोंकी मुश्किलें अिसी तरहकी हैं।

दूसरी ताकतोंकी तरह रूहानी ताकत भी मनुष्यकी सेवाके लिअे है। सदियोंसे थोड़ी-बहुत सफलताके साथ शारीरिक रोगोंको ठीक करनेके लिअे अुसका अुपयोग होता रहा है। अिस बातको छोड़ भी दें, तो भी अगर जिस्मानी बीमारियोंके अिलाजके लिअे कामयाबीके साथ अुसका अिस्तेमाल हो सकता हो, तो अुसका अुपयोग न करना बहुत बड़ी गलती है। क्योंकि आदमी जड़ तत्त्व भी है और आत्मा भी है। और, अिन दोनोंका अेक-दूसरे पर असर होता है। अगर आप मलेरियासे बचनेके लिअे कुनैन लेते हैं, और अिस बातका खयाल भी नहीं करते कि करोड़ोंको कुनैन नहीं मिलती, तो आप अुस अिलाजके अिस्तेमालसे क्यों अिनकार करते हैं जो आपके अन्दर है? क्या सिर्फ अिसलिअे कि करोड़ों अपने अज्ञानके कारण अुसका अिस्तेमाल नहीं करते? अगर करोड़ों अनजाने या हो सकता है जान-बूझकर भी गन्दे रहें, तो क्या आप अपनी सफाअी और सेहतका ध्यान छोड़ देंगे? सखावतकी गलत कल्पनाके कारण अगर आप साफ नहीं रहेंगे, तो गन्दे और बीमार रहकर आप अुन्हीं करोड़ोंकी सेवाका फर्ज भी अपने अूपर नहीं ले सकेंगे। और यह बात तो पक्की है कि आत्माका रोगी या गन्दा होना (अुसे अच्छी और साफ रखनेसे अिनकार करना) बीमार और गन्दा शरीर रखनेसे भी बुरा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्तिका अर्थ यही है कि आदमी हर तरहसे अच्छा रहे। फिर आप अच्छे क्यों न रहें? अगर अच्छे रहेंगे, तो दूसरोंको अच्छा रहनेका रास्ता दिखा सकेंगे, और अिससे भी बढ़कर अच्छे होनेके कारण आप दूसरोंकी सेवा कर सकेंगे। लेकिन अगर आप अच्छे होनेके लिअे पेनिसिलिन लेते हैं, हालांकि आप जानते हैं कि दूसरोंको वह नहीं मिल सकती, तो जरूर आप सरासर खुदगरज बनते हैं।

मुझे पत्र लिखनेवाले अिन दोस्तकी दलीलमें जो गड़बड़ी है वह साफ है।

हां, यह जरूर है कि कुनैनकी गोली या गोलियां खा लेना रामनामके अुपयोगके ज्ञानको पानेसे ज्यादा आसान है। कुनैनकी गोलियां खरीदनेकी कीमतसे अिसमें कहीं ज्यादा मेहनत पड़ती है। लेकिन यह मेहनत अुन करोड़ोंके लिअे अुठानी चाहिये, जिनके नाम पर और जिनके लिअे लेखक रामनामको अपने हृदयसे बाहर रखा चाहते हैं।

हरिजनसेवक, १–९–१९४६

३५

बेचैन बना देनेवाली बात

जब कुछ महीनोंकी गैरहाजिरीके बाद गांधीजी सेवाग्राम-आश्रममें लौटे, तो देखा कि आश्रमके अेक सेवककी दिमागी हालत खराब हो गअी है। जब वे पहली बार आश्रममें आये थे, तब भी अुनकी हालत अैसी ही थी। यह पागलपनका दूसरा हमला था। अुनकी हालत अितनी खराब हो गअी कि अुन्हें संभालना मुश्किल हो गया, अिसलिअे अुनके बारेमें फौरन ही कुछ फैसला कर लेनेकी जरूरत पैदा हो गअी। अिसलिअे वर्धाके सरकारी अस्पतालके बड़े डॉक्टरकी यानी सिविल सर्जनकी सलाह पूछी गअी। अुन्होंने कहा कि वे वर्धाके सरकारी सिविल अस्पतालमें तो बीमारको रख नहीं सकेंगे, लेकिन अगर अुन्हें जेलके अस्पतालमें रखा जाय, तो वे अुनकी सार-संभाल कर सकेंगे और थोड़ा-बहुत अिलाज भी करेंगे। अिसलिअे बीमारकी और आश्रमकी भलाअीके खयालसे अुनको जेल भेजना पड़ा। गांधीजीके लिअे यह चीज बहुत ही दुःखदायी हो गअी। अिसने अुन्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेचैन बना दिया। लेकिन दूसरा कोअी रास्ता भी न था। अुन्होंने आश्रम-वालोंके सामने अपनी परेशानीका जिक्र किया। वे बोले — "ये भाअी अेक अच्छे सेवक हैं। पिछले साल तन्दुरुस्त होनेके बाद वे आश्रमके बगीचेका काम देखते थे और दवाखानेका हिसाब रखते थे। वे लगनके साथ अपना काम करते और अुसीमें मगन रहते थे। फिर अुन्हें मलेरिया हो गया और अुसके लिअे अुनको कुनैनका अिंजेक्शन दिया गया; क्योंकि खाने या पीनेके बजाय सूअीके जरिये कुनैन लेनेसे वह सीधी खूनमें मिल जाती है और जल्दी असर करती है। अिन भाअीका यह खयाल हो गया है कि अिंजेक्शन अुनके दिमागमें चढ़ गया है, और अुसीका दिमाग पर अितना बुरा असर हुआ है। आज सुबह जब मैं अपने कमरेमें बैठा काम कर रहा था, तो मैंने देखा कि वे बाहर खड़े चिल्ला रहे हैं और हवामें अिधर-अुधर हाथ अुछालते हुअे घूम रहे हैं। मैं बाहर निकलकर अुनके साथ घूमने लगा। अिससे वे शान्त हुअे। लेकिन जैसे ही मैं अुनसे अलग होकर अपनी जगह पर लौटा, वे फिर अपने दिमागका तौल खो बैठे और किसीके बसके न रहे। जब वे बिफरते हैं तो किसीकी बात नहीं सुनते। अिसीलिअे अुनको जेल भेज देना पड़ा।

"कुदरती तौर पर मुझे अिस खयालसे तकलीफ होती है कि हमें अपने ही अेक सेवकको जेलमें भेजना पड़ा है। अिस पर कोअी मुझसे पूछ सकता है — 'आप दावा करते हैं कि रामनाम सब रोगोंका रामबाण अिलाज है, तो फिर आपका वह रामनाम कहां गया?' सच है कि अिस मामलेमें मैं नाकाम रहा हूं, फिर भी मैं कहता हूं कि रामनाममें मेरी श्रद्धा ज्यों की त्यों बनी हुअी है। रामनाम कभी नाकाम नहीं हो सकता। नाकामीका मतलब तो यही है कि हममें कहीं कोअी खामी है। अिस नाकामीकी वजहको हमें अपने अन्दर ही ढूंढ़ना चाहिये।"

हरिजनसेवक, १–९–१९४६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम-साधनाकी निशानियां

रामनाम जिसके हृदयसे निकलता है, अुसकी पहचान क्या है? अगर हम अितना न समझ लें, तो रामनामकी फजीहत हो सकती है। वैसे भी होती तो है ही। माला पहनकर और तिलक लगाकर रामनाम बड़बड़ानेवाले तो बहुत मिलते हैं। कहीं मैं अुनकी संख्याको बढ़ा तो नहीं रहा हूं? यह डर अैसा-वैसा नहीं है। आजकलके मिथ्याचारमें क्या करना चाहिये? क्या चुप रहना ही ठीक नहीं? हो सकता है यही ठीक हो। लेकिन बनावटी चुपसे कोअी फायदा नहीं। जीते-जागते मौनके लिअे तो बड़ी भारी साधनाकी जरूरत है। अुसके अभावमें हृदयगत रामनामकी पहचान क्या? अिस पर हम गौर करें।

अेक वाक्यमें कहा जाय तो रामके भक्त और गीताके स्थितप्रज्ञमें कोअी भेद नहीं। ज्यादा गहरे अुतरें तो हम देखेंगे कि रामभक्त पंच महाभूतोंका सेवक होगा। वह कुदरतके कानून पर चलेगा; अिसलिअे अुसे किसी तरहकी बीमारी होगी ही नहीं। होगी भी तो वह अुसे पंच महाभूतोंकी मददसे अच्छी कर लेगा। किसी भी अुपायसे भौतिक दुःख दूर कर लेना शरीरी — आत्मा — का काम नहीं; शरीरका काम भले हो। अिसलिअे जो शरीरको ही आत्मा मानते हैं, जिनकी दृष्टिमें शरीरसे अलग शरीरधारी आत्मा जैसा कोअी तत्त्व नहीं, वे तो शरीरको टिकाये रखनेके लिअे सारी दुनियामें भटकेंगे। लंका भी जायंगे। अिससे अुलटे, जो यह मानता है कि आत्मा देहमें रहते हुअे भी देहसे अलग है, हमेशा कायम रहनेवाला तत्त्व है, अनित्य शरीरमें बसता है, शरीरकी संभाल तो रखता है, पर शरीरके जानेसे घबराता नहीं, दुःखी नहीं होता और सहज ही अुसे छोड़ देता है, वह देहधारी डॉक्टर-वैद्योंके पीछे नहीं भटकता। वह खुद ही अपना डॉक्टर बन जाता है। सब काम करते हुअे भी वह आत्माका ही खयाल रखता है। वह मूर्च्छामें से जागे हुअे मनुष्यकी तरह बरताव करता है।

अैसा मनुष्य हर सांसके साथ रामनाम जपता रहता है। वह सोता है तो भी अुसका राम जागता है। खाते-पीते, कुछ भी काम करते हुअे राम तो अुसके साथ ही रहेगा। अिस साथीका खो जाना ही मनुष्यकी सच्ची मृत्यु है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अिस रामको अपने पास रखनेके लिअे या अपने-आपको रामके पास रखनेके लिअे वह पंच महाभूतोंकी मदद लेकर सन्तोष मानेगा। यानी वह मिट्टी, हवा, पानी, सूरजकी रोशनी और आकाशका सहज, साफ और व्यवस्थित तरीकेसे अिस्तेमाल करके जो पा सकेगा अुसमें सन्तोष मानेगा। यह अुपयोग रामनामका पूरक नहीं, पर रामनामकी साधनाकी निशानी है। रामनामको अिन मददगारोंकी जरूरत नहीं। लेकिन अिसके बदले जो अेकके बाद दूसरे वैद्य-हकीमोंके पीछे दौड़े और रामनामका दावा करे, अुसकी बात कुछ जंचती नहीं।

अेक ज्ञानीने तो मेरी बात पढ़कर यह लिखा है कि रामनाम अैसा कीमिया है, जो शरीरको बदल डालता है। वीर्यको अिकट्ठा करना दबा कर रखे हुअे धनके समान है। अुसमें से अमोघ शक्ति पैदा करनेवाला तो रामनाम ही है। खाली संग्रह करनेसे तो घबराहट होती है। किसी भी समय अुसका पतन हो सकता है। लेकिन जब रामनामके स्पर्शसे वह वीर्य गतिमान होता है, अूर्ध्वगामी (अूपर जानेवाला) बनता है, तब अुसका पतन नामुमकिन हो जाता है।

शरीरके पोषणके लिअे शुद्ध खून जरूरी है। आत्माके पोषणके लिअे शुद्ध वीर्यशक्तिकी जरूरत है। अिसे दिव्य शक्ति कह सकते हैं। यह शक्ति सारी अिन्द्रियोंकी शिथिलताको मिटा सकती है। अिसीलिअे कहा है कि रामनाम हृदयमें बैठ जाय, तो नयी जिन्दगी शुरू होती है। यह कानून जवान, बूढ़े, मर्द, औरत सबको लागू होता है।

पश्चिममें भी यह खयाल पाया जाता है। क्रिश्चियन-सायन्स नामका सम्प्रदाय बिलकुल यही नहीं, तो करीब-करीब अिसी तरहकी बात कहता है। लेकिन मैं मानता हूं कि हिन्दुस्तानको अैसे सहारेकी जरूरत नहीं, क्योंकि हिन्दुस्तानमें तो यह दिव्य विद्या पुराने जमानेसे चली आ रही है।

हरिजनसेवक, २९–६–१९४७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३७

सर्वधर्म-समभाव

मेरे पास सवालों और गुस्से भरे पत्रोंकी झड़ी लगी रहती है। पूछा जाता है : आप अपनेको मुसलमान क्यों कहते हैं? आप अैसा क्यों मानते हैं कि राम और रहीममें कोअी फर्क नहीं है? आपने यहां तक कैसे कह डाला कि कलमा पढ़नेमें आपको कोअी अेतराज नहीं है? आप पंजाब क्यों नहीं जाते? क्या आप बुरे हिन्दु नहीं हैं? क्या आप पांचवीं कतारके नहीं हैं? क्या आपकी अहिंसा हिन्दुओंको डरपोक और बुजदिल नहीं बना रही है? अेक लिफाफा मेरे नाम आया, जिस पर मोहम्मद गांधी लिखा था!

गांधीजीने धीरज और शान्तिके साथ लोगोंको समझाया: "कुछ लोगोंके पापोंके लिअे अिस्लामको क्यों और कैसे दोष दिया जा सकता है? मैं सनातनी हिन्दू होनेका दावा करता हूं। और चूंकि हिन्दू धर्मका निचोड़ और सचमुच दुनियाके सारे धर्मोंका निचोड़ सर्वधर्म-समभाव है, मेरा यह दावा है कि अगर मैं अच्छा हिन्दू हूं, तो मैं अच्छा मुसलमान और अच्छा अीसाअी भी हूं। अपनेको या अपने धर्मको दूसरोंसे अूंचा माननेका दावा करना धर्म-भावनाके खिलाफ है। नम्रता अहिंसाकी जरूरी शर्त है। क्या हिन्दू धर्मग्रन्थोंमें यह नहीं कहा गया है कि अीश्वरके हजार नाम हैं? तो रहीम अुनमें से अेक क्यों नहीं हो सकता? कलमा सिर्फ भगवानकी तारीफ करता है और मोहम्मदको अुसका पैगम्बर मानता है। जैसे मैं बुद्ध, जरथुस्त और अीसाको मानता हूं, वैसे ही अीश्वरकी तारीफ करनेमें और मोहम्मदको पैगम्बर माननेमें मुझे कोअी हिचकिचाहट नहीं है।"

हरिजन, २७–४–१९४७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच्ची रोशनी

मुझे अफसोस है कि आज हिन्दुस्तानमें रामराज्य नहीं है। अिसलिअे हम दिवाली कैसे मना सकते हैं? वही आदमी अिस विजयकी खुशी मना सकता है, जिसके दिलमें राम है। क्योंकि भगवान ही हमारी आत्माको रोशनी दे सकता है, और अैसी ही रोशनी सच्ची रोशनी है। आज जो भजन गाया गया, अुसमें कविकी भगवानको देखनेकी अिच्छा पर जोर दिया गया है। लोगोंकी भीड़ दिखावटी रोशनी देखने जाती है, लेकिन आज हमें जिस रोशनीकी जरूरत है वह तो प्रेमकी रोशनी है। हमारे दिलोंमें प्रेमकी रोशनी पैदा होनी चाहिये। तभी सब लोग बधाअियां पाने लायक बन सकते हैं। आज हजारों-लाखों लोग भयानक दु:ख भोग रहे हैं। क्या आप लोगोंमें से हरअेक अपने दिल पर हाथ रखकर यह कह सकता है कि हर दु:खी आदमी या औरत — फिर वह हिन्दू, सिक्ख या मुसलमान कोअी भी हो — मेरा सगा भाअी या बहन है? यही आपकी कसौटी है। राम और रावण भलाअी और बुराअीकी ताकतोंके बीच हमेशा चलनेवाली लड़ाअीके प्रतीक हैं। सच्ची रोशनी भीतरसे पैदा होती है।

हरिजनसेवक, २३–११–१९४७

३९

अवसानसे अेक दिन पहले

[२ फरवरी, १९४८ को श्री किशोरलालभाअीको गांधीजीके हाथका लिखा हुआ अेक पोस्ट कार्ड मिला, जिसकी नकल नीचे दी जाती है।

नोट — श्री शंकरन हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राममें शिक्षक हैं।

यहां 'किया' क्रियाका सम्बन्ध गांधीजीकी 'करो या मरो' की प्रतिज्ञासे है, जो अुन्होंने दिल्ली पहुंचने पर ली थी।

'दोनोंको आशीर्वाद' का मतलब है — श्री किशोरलालभाअीको और अुनकी पत्नी श्री गोमतीबहनको। — सम्पादक]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

" नअी दिल्ली, २९–१–'४८

" चि० किशोरलाल,

" आज प्रार्थनाके बाद मैं अपना सारा समय पत्र लिखनेमें बिता रहा हूं। शंकरनजीकी लड़कीके मरनेके समाचार यहां भेजकर तुमने ठीक किया। मैंने अुनको पत्र लिख दिया है। मेरे वहां (सेवाग्राम) आनेकी बातको अभी अनिश्चित समझना चाहिये। वहां ता० ३ से ता० १२ तक रहनेकी बात मैं चला रहा हूं। अगर यह कहा जाय कि दिल्लीमें मैंने 'किया' है, तो प्रतिज्ञा-पालनके लिअे मेरा यहां रहना अब जरूरी नहीं है। अिसका आधार यहांके मेरे साथियों पर है। शायद कल निश्चय किया जा सकेगा। मेरे आनेका मकसद अेक तो अिस पर विचार करना है कि रचनात्मक काम करनेवाली सारी संस्थायें अेक हो सकती हैं या नहीं; और दूसरे, जमनालालकी पुण्यतिथि मनाना है। मुझमें ठीक शक्ति आ रही है। अिस बार किडनी और लिवर दोनों बिगड़े हैं। मेरी दृष्टिसे यह रामनाममें मेरे विश्वासके कच्चेपनकी वजहसे है।

दोनोंको आशीर्वाद "

हरिजनसेवक, ८–२–१९४८

४०

" राम ! राम ! "

जब गांधीजी प्रार्थना-सभाके बीचसे रस्सियोंसे घिरे रास्तेमें चलने लगे, तो अुन्होंने प्रार्थनामें शामिल होनेवाले लोगोंके नमस्कारोंका जवाब देनेके लिअे लड़कियोंके कन्धोंसे अपने हाथ अुठा लिअे। अेकाअेक भीड़में से कोअी दाहिनी ओरसे भीड़को चीरता हुआ अुस रास्ते पर आया। छोटी मनुने यह सोचा कि वह आदमी बापूके पांव छूनेको आगे बढ़ रहा है। अिसलिअे अुसने असे अैसा करनेके लिअे झिड़का, क्योंकि प्रार्थनाके लिअे पहले ही देर हो चुकी थी। अुसने रास्तेमें आनेवाले आदमीका हाथ पकड़कर अुसे रोकनेकी कोशिश की। लेकिन अुसने जोरसे मनुको धक्का दिया, जिससे अुसके हाथकी आश्रम-भजनावली, माला और बापूका पीकदान नीचे गिर गये। ज्यों ही वह बिखरी हुआ चीजोंको अुठानेके लिअे झुकी, वह आदमी बापूके सामने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
खड़ा हो गया — अितना नजदीक खड़ा था कि पिस्तौलसे निकली हुअी गोलीका खोल बादमें बापूके कपड़ोंकी पर्तमें अुलझा हुआ मिला। सात कारतूसोंवाली ऑटोमेटिक पिस्तोलसे जल्दी-जल्दी तीन गोलियां छूटीं। पहली गोली नाभीसे ढाअी अिंच अूपर और मध्यरेखासे साढ़े तीन अिंच दाहिनी तरफ पेटकी दाहिनी बाजूमें लगी। दूसरी गोली मध्यरेखासे अेक अिंचकी दूरी पर दाहिनी तरफ घुसी और तीसरी गोली छातीकी दाहिनी तरफ लगी। पहली और दूसरी गोली शरीरको पार करके पीठ पर बाहर निकल आअीं। तीसरी गोली अुनके फेफड़ेमें ही रुकी रही। पहले वारमें अुनका पांव, जो गोली लगनेके वक्त आगे बढ़ रहा था, नीचे आ गया। दूसरी गोली छोड़ी गअी, तब तक वे अपने पांवों पर ही खड़े थे। और अुसके बाद वे गिर गये। अुनके मुंहसे आखिरी शब्द "राम! राम!" निकले।

हरिजनसेवक, १५–२–१९४८

४१

प्रार्थना-प्रवचनोंमें से

रामनाम — अुसके नियम और अनुशासन

गांधीजीने कहा: रामनाम आदमीको बीमारीमें मदद कर सकता है, लेकिन अुसके कुछ नियम और अनुशासन हैं। कोअी जरूरतसे ज्यादा खाना खाकर 'रामनाम' जपे और फिर भी अुसे पेटका दर्द हो, तो वह गांधीको दोष नहीं दे सकता। रामनामका अुचित ढंगसे अुपयोग किया जाय तभी अुससे लाभ होता है। कोअी आदमी रामनाम जपे और लूटपाट मचावे, तो वह मोक्षकी आशा नहीं कर सकता। वह सिर्फ अुन्हींके लिअे है, जो आत्मशुद्धिके लिअे अुचित अनुशासन पालनेके लिअे तैयार हैं।

— बम्बअी, १५–३–'४६

सबसे असरकारक अिलाज

अुरुळीकांचनकी प्रार्थना-सभामें भाषण करते हुअे गांधीजीने कहा: रामधुन शारीरिक और मानसिक बीमारियोंके लिअे सबसे असरकारक अिलाज है। कोअी डॉक्टर या वैद्य दवा देकर बीमारी अच्छी करनेका वचन नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दे सकता। लेकिन अगर आप भगवानसे प्रार्थना करें, तो वह आपके दुःखों और चिंताओंको जरूर मिटा सकता है। लेकिन प्रार्थनाको असरकारक बनानेके लिअे हमें सच्चे दिलसे रामधुनमें भाग लेना चाहिये, और तभी हमें शांति और सुखका अनुभव हो सकता है।

अिसके अलावा, दूसरी शर्तें भी हैं, जिन्हें पूरा करना जरूरी है। हमें अुचित खुराक लेना चाहिये, काफी सोना चाहिये और कभी गुस्सा नहीं करना चाहिये। सबसे पहली बात तो यह है कि हमें कुदरतके साथ मेल साध कर रहना चाहिये और अुसके नियमोंका पालन करना चाहिये।

— पूना, २२–३–'४६

तैयारी जरूरी

प्रार्थनाके बाद सभामें भाषण करते हुअे गांधीजीने कहा: अीमानदार स्त्री-पुरुषोंने मुझे कहा है कि पूरी-पूरी कोशिश करने पर भी वे यह नहीं कह सकते कि वे दिलसे रामनाम लेते हैं। अुन्हें मेरा जवाब यह है कि वे कोशिश करते रहें और अपार धीरज रखें। अेक लड़केको डॉक्टर बननेके लिअे कम-से-कम १६ सालका कठिन अभ्यास जरूरी होता है। तब फिर रामनामको दिलमें बसानेके लिअे कितना ज्यादा समय जरूरी होना चाहिये!

— नअी दिल्ली, २०–४–'४६

भीतरी और बाहरी पवित्रता

जो आदमी रामनाम जपकर अपनी अन्तरात्माको पवित्र बना लेता है, वह बाहरी गन्दगीको बरदाश्त नहीं कर सकता। अगर लाखों-करोड़ों लोग सच्चे हृदयसे रामनाम जपें, तो न तो दंगे — जो सामाजिक रोग हैं — हों और न बीमारी हो। दुनियामें रामराज्य कायम हो जाय।

— नअी दिल्ली, २१–४–'४६

रामनामका दुरुपयोग

आज प्रार्थनाके बादके भाषणमें गांधीजीने कुदरती अिलाजका जिक्र किया। यानी तन, मन और आत्माकी बीमारियोंको खास तौर पर रामनामकी मददसे मिटानेके बारेमें समझाया। अेक भाअीने लिखा था कि कुछ लोग अन्ध-विश्वासकी वजहसे कपड़ों पर रामनाम छपवा लेते हैं, और अुन्हें अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बदन पर, खासकर छाती पर पहनते-ओढ़ते हैं। दूसरे कुछ लोग कागजके टुकड़ों पर बारीक अक्षरोंमें करोड़ोंकी तादादमें रामनाम लिखते हैं और अुन्हें काट-काटकर अुनकी छोटी-छोटी गोलियां अिस खयालसे निगल जाते हैं कि अिस तरह वे यह दावा कर सकेंगे कि रामनाम अुनके दिलमें छप गया है। अेक और भाअीने अुनसे पूछा था कि क्या अुन्होंने रामनामको सब तरहकी बीमारियोंका अेक ही रामबाण अिलाज कहा है? और क्या अुनके ये राम अीश्वरके अवतार और अयोध्याके राजा दशरथके पुत्र थे? कुछ अैसे भी लोग हैं, जो मानते हैं कि गांधीजी खुद भुलावेमें पड़े हुअे हैं और अन्ध-विश्वासोंसे भरे अिस देशके हजारों अन्ध-विश्वासोंमें अेक और अन्ध-विश्वास बढ़ाकर दूसरोंको भी भुलावेमें डालनेकी कोशिश कर रहे हैं। गांधीजीने कहा: "अिस तरहकी टीकाका मेरे पास कोअी जवाब नहीं है। मैं तो अपने दिलसे यह कहता हूं कि अगर लोग सचाअीका दुरुपयोग करते हैं और धोखा-धड़ीसे काम लेते हैं, तो मैं अुसकी परवाह क्यों करूं? जब तक मुझे अपनी सचाअीका पक्का भरोसा है, मैं अिस डरसे अुसका अैलान करनेसे रुक कैसे सकता हूं कि लोग अुसे गलत समझेंगे या अुसका गलत अिस्तेमाल करेंगे? अिस दुनियामें अैसा कोअी नहीं है, जिसने पूरी-पूरी सचाअीको जाना हो। यह तो सिर्फ अेक अीश्वरका ही विशेषण है। हम सब तो सिर्फ सापेक्ष सत्यको ही जानते हैं। अिसलिअे जिसे हम जानते हैं, अुसीके मुताबिक हम अपना बरताव रख सकते हैं। अिस तरह सचाअीका पालन करनेसे कोअी कभी गुमराह नहीं हो सकता।"

—नअी दिल्ली, २४–५–'४६

रामनाम कैसे लें?

आजके अपने भाषणमें गांधीजीने बताया कि किस तरह अिन्सानको सतानेवाली तीनों तरहकी बीमारियोंके लिअे अकेले रामनामको ही रामबाण अिलाज बनाया जा सकता है। अुन्होंने कहा: "अिसकी पहली शर्त तो यह है कि रामनाम दिलके अन्दरसे निकलना चाहिये। लेकिन अिसका मतलब क्या? लोग अपनी शारीरिक बीमारियोंका अिलाज खोजनेके लिअे दुनियाके आखिरी छोर तक जानेसे भी नहीं थकते, जब कि मन और आत्माकी बीमारियोंके सामने ये शारीरिक बीमारियां बहुत कम [illegible] रखती हैं। मनुष्यका भौतिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरीर तो आखिर अेक दिन मिटने ही वाला है। असका स्वभाव ही है कि वह हमेशाके लिअे रह ही नहीं सकता। और तिस पर भी लोग अपने अन्दर रहनेवाली अमर आत्माको भुलाकर असीका ज्यादा प्यार-दुलार करते हैं। रामनाममें श्रद्धा रखनेवाला आदमी अपने शरीरको अैसे झूठे लाड़ नहीं लड़ायेगा, बल्कि असे अीश्वरकी सेवा करनेका अेक जरिया-भर समझेगा। असको अिस तरहका माकूल जरिया बनानेके लिअे रामनामसे बढ़कर दूसरी कोअी चीज नहीं।

"रामनामको हृदयमें अंकित करनेके लिअे अनन्त धीरजकी जरूरत है। अिसमें युग-के-युग लग सकते हैं, लेकिन यह कोशिश करने जैसी है। अिसमें कामयाबी भी भगवानकी कृपासे ही मिल सकती है।

"जब तक आदमी अपने अन्दर और बाहर सचाअी, अीमानदारी और पवित्रताके गुणोंको नहीं बढ़ाता, तब तक असके दिलसे रामनाम नहीं निकल सकता। हम लोग रोज शामकी प्रार्थनामें स्थितप्रज्ञका वर्णन करनेवाले श्लोक पढ़ते हैं। हममें से हरअेक आदमी स्थितप्रज्ञ बन सकता है, बशर्ते कि वह अपनी अिन्द्रियोंको अपने काबूमें रखे और जीवनको सेवामय बनानेके लिअे ही खाये, पीये और मौज-शौक या हंसी-विनोद करे। मसलन्, अगर अपने विचारों पर आपका कोअी काबू नहीं है और अगर आप अेक तंग अंधेरी कोठरीमें असकी तमाम खिड़कियां और दरवाजे बन्द करके सोनेमें कोअी हर्ज नहीं समझते और गन्दी हवा लेते हैं या गन्दा पानी पीते हैं, तो मैं कहूंगा कि आपका रामनाम लेना बेकार है।

"लेकिन अिसका यह मतलब नहीं कि चूंकि आप जितने चाहिये अुतने पवित्र नहीं है, अिसलिअे आपको रामनाम लेना छोड़ देना चाहिये। क्योंकि पवित्र बननेके लिअे भी रामनाम लेना लाभकारी है। जो आदमी दिलसे रामनाम लेता है, वह आसानीसे अपने-आप पर काबू रख सकता है और अनुशासनमें रह सकता है। असके लिअे तन्दुरुस्ती और सफाअीके नियमोंका पालन करना सहल हो जायगा। असकी जिन्दगी सहज भावसे बीत सकेगी — असमें कोअी विषमता न होगी। वह किसीको सताना या दुःख पहुंचाना पसन्द नहीं करेगा। दूसरोंके दुःखोंको मिटानेके लिअे, अुन्हें राहत पहुंचानेके लिअे, खुद तकलीफ अुठा लेना असकी आदतमें आ जायगा और असको हमेशाके लिअे अेक अमिट सुखका लाभ मिलेगा — असका मन अेक शाश्वत और अमर सुखसे भर जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अिसलिअे मैं कहता हूं कि आप अिस कोशिशमें लगे रहिये और जब तक काम करते हैं तब तक सारा समय मन-ही-मन रामनाम लेते रहिये। अिस तरह करनेसे अेक दिन अैसा भी आयेगा, जब रामनाम आपका सोते-जागतेका साथी बन जायगा और अुस हालतमें आप औश्वरकी कृपासे तन, मन और आत्मासे पूरे-पूरे स्वस्थ और तन्दुरुस्त बन जायंगे।"

—नअी दिल्ली, २५-५-'४६

मौन विचारकी शक्ति

आजकी प्रार्थना-सभामें गांधीजीने कहा : "आप सब मेरे साथ रामनाम लेने या रामनाम लेना सीखनेके लिअे रोज रोज अिन प्रार्थना-सभाओंमें आते रहे हैं। लेकिन रामनाम सिर्फ जबानसे नहीं सिखाया जा सकता। मुंहसे निकले बोलके मुकाबले दिलका मौन विचार कहीं ज्यादा ताकत रखता है। अेक सच्चा विचार सारी दुनिया पर छा सकता है — अुसे प्रभावित कर सकता है। वह कभी बेकार नहीं जाता। विचारको बोल या कामका जामा पहनानेकी कोशिश ही अुसकी ताकतको सीमित कर देती है। अैसा कौन है जो अपने विचारको शब्द या कार्यमें पूरी तरह प्रकट करनेमें कामयाब हुआ हो?"

आगे चलकर गांधीजीने कहा : "आप यह पूछ सकते हैं कि अगर अैसा है, तो फिर आदमी हमेशाके लिअे मौन ही क्यों न ले ले? अुसूलकी दृष्टिसे तो यह संभव है, लेकिन जिन शर्तोंके मुताबिक मौन विचार पूरी तरह क्रियाकी जगह ले सकते हैं, अुन शर्तोंको पूरा करना बहुत मुश्किल है। मैं खुद अपने विचारों पर अिस तरहका पूरा-पूरा काबू पा लेनेका कोअी दावा नहीं कर सकता। मैं अपने मनसे बेमतलब और बेकारके खयालोंको पूरी तरह दूर नहीं रख सकता। अिस हालतको पाने या अिस तक पहुंचनेके लिअे तो अनन्त धीरज, जागृति और तपश्चर्याकी जरूरत है।

"कल जब मैंने आपसे यह कहा था कि रामनामकी शक्तिका कोअी पार नहीं है, तब मैं किसी आलंकारिक भाषामें नहीं बोल रहा था, बल्कि सचमुच यही कहना भी चाहता था। मगर अिस चीजको महसूस करनेके लिअे बिलकुल शुद्ध और पवित्र हृदयसे रामनामका निकलना जरूरी है। मैं खुद अिस हालतको पानेकी कोशिशमें लगा हुआ हूं। मेरे दिलमें तो अिसकी अेक तसवीर खिंच गअी है, लेकिन मैं अिस पूरी तरह अमलमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
नहीं ला सका हूं। जब वह हालत पैदा हो जायगी, तब तो रामनाम रटना भी जरूरी न रह जायगा।*

"मुझे अुम्मीद है कि मेरी गैरहाजिरीमें भी आप अपने घरोंमें अलग-अलग और अेक साथ बैठकर रामनाम लेते रहेंगे। सबके साथ मिलकर, सामूहिक रूपमें, प्रार्थना करनेका रहस्य यह है कि अुसका अेक-दूसरे पर जो शान्त प्रभाव पड़ता है, वह आध्यात्मिक अुन्नतिकी राहमें मददगार हो सकता है।"

—नअी दिल्ली, २६–५–'४६

रामनाम जैसा कोअी जादू नहीं

आजकी प्रार्थना-सभामें गांधीजीने कहा: "रामनाम सिर्फ कुछ खास आदमियोंके लिअे ही नहीं है, वह सबके लिअे है। जो रामका नाम लेता है, वह अपने लिअे अेक भारी खजाना जमा करता जाता है। और यह तो अेक अैसा खजाना है, जो कभी खूटता ही नहीं। जितना अिसमें से निकालो, अुतना बढ़ता ही जाता है। अिसका अन्त ही नहीं है। और जैसा कि अुपनिषद् कहता है 'पूर्णमें से पूर्ण निकालो, तो पूर्ण ही बाकी रहता है', वैसे ही रामनाम तमाम बीमारियोंका अेक शर्तिया अिलाज है; फिर चाहे वे शारीरिक हों, मानसिक हों, या आध्यात्मिक हों।

"लेकिन शर्त यह है कि रामनाम दिलसे निकले। क्या बुरे विचार आपके मनमें आते हैं? क्या काम या लोभ आपको सताते हैं? अगर अैसा है तो रामनाम जैसा कोअी जादू नहीं।" और अुन्होंने अपना मतलब अेक मिसाल देकर समझाया: "फर्ज कीजिये कि आपके मनमें यह लालच पैदा होता है कि बगैर मेहनत किये, बेअीमानीके तरीकेसे, आप लाखों रुपये कमा लें। लेकिन अगर आपको रामनाम पर श्रद्धा है, तो आप सोचेंगे कि अपने बीवी-बच्चोंके लिअे आप अैसी दौलत क्यों अिकट्ठी करें जिसे वे शायद अुड़ा दें? अच्छे चाल-चलन और अच्छी तालीम और ट्रेनिंगके रूपमें अुनके

---

* मैं अपने जीवनमें अैसे समयकी जरूर आशा करता हूं, जब रामनामका जप भी अेक रुकावट हो जायगा। जब मैं यह समझ लूंगा कि राम वाणीसे भी परे है, तब मुझे अुसका नाम दोहरानेकी जरूरत नहीं रह जायगी।
—यंग अिंडिया, १४–८–'२४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लिअे अैसी विरासत क्यों न छोड़ जायं, जिससे वे ओमानदारी और मेहनतके साथ अपनी रोटी कमा सकें? आप यह सब सोचते तो हैं, लेकिन कर नहीं पाते। मगर रामनामका निरंतर जप चलता रहे, तो अेक दिन वह आपके कण्ठसे हृदय तक अुतर आयेगा, और रामबाण अुपाय साबित होगा। वह आपके सब भ्रम मिटा देगा; आपके झूठे मोह और अज्ञानको छुड़ा देगा। तब आप समझ जायंगे कि आप कितने पागल थे, जो अपने बाल-बच्चोंके लिअे करोड़ोंकी अिच्छा करते थे, बजाय अिसके कि अुन्हें रामनामका वह खजाना देते, जिसकी कीमत कोओी पा नहीं सकता, जो हमें भटकने नहीं देता, जो मुक्तिदाता है। और आप खुशीसे फूले नहीं समायेंगे। आप अपने बाल-बच्चोंसे और अपनी पत्नीसे कहेंगे: 'मैं करोड़ों कमाने गया था, मगर वह कमाना तो भूल गया। दूसरे करोड़ लाया हूं।' वे पूछेंगे: 'कहां है वह हीरा, जरा देखें तो!' जवाबमें आपकी आंखें हंसेंगी, मुंह हंसेगा और धीरेसे आप जवाब देंगे: 'जो करोड़ोंका पति है, अुसे हृदयमें रखकर लाया हूं। तुम भी चैनसे रहोगे, मैं भी चैनसे रहूंगा।'"

—मसूरी, ८–६–'४६

सारी प्रार्थनाओंका सार

शामकी प्रार्थनाके बादके अपने भाषणमें गांधीजीने कहा: मैं आशा करता हूं कि आप अपने घरोंमें सुबह-शाम नियमसे प्रार्थना करेंगे। अगर आप न चाहें तो आपके लिअे संस्कृत श्लोक सीखना कोओी जरूरी नहीं। रामधुन ही काफी है। सारी प्रार्थनाओंका सार यही है कि आप अपने दिलोंमें अीश्वरको बसा लें। अगर आप अिसमें सफल हो जायं, तो आपका, समाजका और सारी दुनियाका भला होगा।

—मसूरी, ८–६–'४६

सरासर धोखा

रामका नाम लेना और रावणका काम करना निकम्मीसे निकम्मी चीज है। हम अपने-आपको धोखा दे सकते हैं, सारी दुनियाको धोखा दे सकते हैं, लेकिन रामको धोखा नहीं दे सकते।

—नअी दिल्ली, १८–६–'४६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अीश्वरके नामका अमृत

प्रार्थनामें गाये हुअे मीराबाअीके भजनकी व्याख्या करते हुअे गांधीजीने कहा : अिस भजनमें भक्त आत्मासे जी भरकर अीश्वर-नामका अमृत पीनेको कहता है। मामूली खान-पानसे आदमीका दिल अूब जाता है और जरूरतसे ज्यादा खाने-पीनेसे बीमारी होती है। लेकिन अीश्वर-नामके अमृतकी अैसी कोअी सीमा नहीं है। आदमी जितना ज्यादा अुसे पीता है, अुतनी ही अुसके लिअे अुसकी प्यास बढ़ती है — लेकिन वह हृदयमें गहरा पैठ जाना चाहिये। जब अैसा होता है तब हमारा सारा भ्रम और आसक्ति, सारी वासना और द्वेष दूर हो जाते हैं। शर्त यही है कि हम अिस कोशिशमें लगे रहें और धीरज रखें। अैसे प्रयत्नका अनिवार्य नतीजा सफलता है।

— नअी दिल्ली, १८–६–'४६

श्रद्धाका चमत्कार

आजकी प्रार्थना-सभामें गांधीजीने कहा : "प्रार्थनामें श्रद्धा रखनेवालेके लिअे निराशा नामकी कोअी चीज नहीं होनी चाहिये, क्योंकि वह जानता है कि समय अुस सर्वशक्तिमान भगवानके हाथमें है। वही समय पर सब कुछ करता है। अिसलिअे भक्त हमेशा श्रद्धा और धीरजके साथ किसी भी कामके होनेका रास्ता देखता है।"

गजेन्द्र-मोक्षकी कथा पर टीका करते हुअे अुन्होंने कहा : "अिस कथाका निचोड़ यह है कि परीक्षाके समय अीश्वर हमेशा अपने भक्तकी मदद करता है। शर्त यही है कि अुस पर मनुष्यकी जीती-जागती श्रद्धा हो और अुसीका मनुष्य आसरा ले। श्रद्धाकी कसौटी यह है कि अपना फर्ज अदा करनेके बाद अुसका जो कुछ भी भला या बुरा नतीजा हो अुसे मनुष्य मान ले। सुख आये या दुःख, अुसके लिअे दोनों बराबर होने चाहिये। जनक राजाके बारेमें कहा जाता है कि अेक बार अुन्हें किसीने आकर कहा : 'महाराज! आपकी राजधानी मिथिला जल रही है।' अुन्होंने जवाब दिया : 'मिथिलायां प्रदग्धायां न मे दह्यति कश्चन' — मिथिलाको आग लगी है तो मुझे अुससे क्या? अुनके अिस धीरज और शान्तिका रहस्य यह था कि वे हमेशा जाग्रत रहते थे, हमेशा अपना फर्ज अदा करते थे। अिसलिअे बाकी सब कुछ वे अीश्वर पर छोड़ सकते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो आप यह जान लें कि पहले तो अीश्वर अपने भक्तको मुसीबतोंसे बचा ही लेता है; और अगर मुसीबत आ ही पड़े, तो भक्त शान्तिसे अीश्वरकी मरजीके सामने सिर झुकाकर खुशी-खुशी अुसे सह लेता है।"

—नअी दिल्ली, २०-६-'४६

रामनामका महत्त्व

आजकी प्रार्थना-सभामें गांधीजीने पूछा : "क्या मैं अेक नअी किस्मके अन्ध-विश्वासका प्रचार कर रहा हूं? अीश्वर कोअी व्यक्ति नहीं। वह सब जगह मौजूद है और सर्वशक्तिमान है। जो भी कोअी अुसे अपने दिलमें जगह देता है, वह अैसी अजीब आशाओं और अुमंगोंसे भर जाता है, जिनकी ताकतका मुकाबला भाप और बिजलीकी ताकतसे नहीं किया जा सकता। वह ताकत तो अुससे भी ज्यादा सूक्ष्म होती है। रामनाम कोअी जादू-टोना नहीं है। वह तो अपने समूचे अर्थके साथ ही लिया जाना चाहिये। रामनाम गणितका अेक अैसा सूत्र या फॉर्मूला है, जो थोड़ेमें बेहिसाब खोज और तजरबे (प्रयोग) को जाहिर कर देता है। सिर्फ मुंहसे रामनाम रटनेसे कोअी ताकत नहीं मिलती। ताकत पानेके लिअे यह जरूरी है कि सोच-समझकर नाम जपा जाय और जपकी शर्तोंका पालन करते हुअे जिन्दगी बिताअी जाय। अीश्वरका नाम लेनेके लिअे मनुष्यको अीश्वरमय या खुदाकी जिन्दगी बितानी चाहिये।"

—पूना, २-७-'४६

भीतरी और बाहरी सफाअी

आजकी प्रार्थना-सभामें गांधीजीने हरिजन-बस्तीके आसपासकी गन्दगीका जिक्र किया, जिसमें वे रहते थे। अुन्होंने कहा: "यहां मैं अेक ओवरसीयरके मकानमें रहता हूं। मेरी समझमें नहीं आता कि क्यों ये ओवरसीयर और यहांकी सफाअीका अिन्तजाम करनेवाले यानी म्युनिसिपैलिटी और पी० डब्ल्यु० डी० के लोग अिस सारी गन्दगीको बरदाश्त करते हैं। मेरे यहां आने और रहनेसे फायदा ही क्या, अगर मैं अिस जगहको साफ और स्वास्थ्यप्रद बनानेके लिअे अुन्हें समझा न सकूं?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"लेकिन आप पूछ सकते हैं कि अिस सबके और प्रार्थनाके बीच क्या सम्बन्ध है? जो आदमी बाहरी सफाअीके नियम नहीं पाल सकता, वह भीतरी सफाअीके लिअे प्रार्थना नहीं कर सकता। अगर आप प्रार्थनामें बेमतलबके कुतूहलको शान्त करने ही आते हैं, तो आप यहां आकर पाप करते हैं। अगर आप सच्चे दिलसे प्रार्थनामें शामिल होनेके लिअे आते हैं, तो आपको भीतरी और बाहरी सफाअीके लिअे प्रार्थना करनी चाहिये। कहना कुछ और करना कुछ, यह सरासर धोखा है। लेकिन अीश्वरको कोअी धोखा नहीं दे सकता, क्योंकि वह सब जगह मौजूद है और सबको देखता है।

"यहां मेरे आसपास हद दरजेकी गन्दगी है। डॉ० दीनशा मेहताने मुझसे कहा है कि यहांके पाखाने अितने गन्दे हैं कि वे अुन्हें अिस्तेमाल नहीं कर सकते। यहां चारों तरफ अितनी मक्खियां हैं कि अुन्हें डर लगता है कि कहीं मैं अुन मक्खियोंकी फैलाअी छूतका शिकार बनकर बीमार न पड़ जाअूं। मुझे खुद अपनी कोअी फिकर नहीं है। गो कि दो-दो डॉक्टर मेरी तबीयतका खयाल रखते हैं, फिर भी मैं अीश्वरको छोड़कर और किसीका भरोसा नहीं रखता। वह सर्वशक्तिमान भगवान मेरे स्वास्थ्यका खयाल रखेगा। लेकिन मेरे साथियोंको अीश्वरमें अैसी श्रद्धा नहीं है। अिसलिअे मुझे अुनकी फिकर रहती है।"

—बम्बअी, ६-७-'४६

सबसे बड़ा अिलाज

"मुझे अपने दोस्तोंकी तरफसे कअी खत और सन्देश मिले हैं, जिनमें मेरे हमेशा बने रहनेवाले कफके बारेमें चिन्ता जाहिर की गअी है। जैसे मेरे भाषणकी बातें फैल गअीं, अुसी तरह मेरे कफकी बात भी फैल गअी, जो शामको खुलेमें अकसर मुझे तकलीफ देता है। फिर भी, पिछले चार दिनोंसे कफ मुझे कम तकलीफ दे रहा है, और मुझे आशा है कि वह जल्दी ही पूरी तरह मिट जायगा। मेरे कफके लगातार बने रहनेका यह कारण है कि मैंने कोअी भी डॉक्टरी अिलाज करानेसे अिनकार कर दिया है। डॉ० सुशीलाने मुझसे कहा कि अगर आप शुरूमें ही पेनिसिलिन ले लेंगे, तो आप तीन ही दिनोंमें अच्छे हो जायंगे, वर्ना कफके मिटनेमें तीन हफ्ते लग जायेंगे। मुझे पेनिसिलिनके कारगर होनेमें कोअी शक नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
है। लेकिन मेरा यह भी विश्वास है कि रामनाम ही सारी बीमारियोंका सबसे बड़ा अिलाज है। अिसलिअे वह सारे अिलाजोंसे अूपर है। चारों तरफसे मुझे घेरनेवाली आगकी लपटोंके बीच तो भगवानमें जीती-जागती श्रद्धाकी मुझे सबसे बड़ी जरूरत है। वही लोगोंको अिस आगको बुझानेकी शक्ति दे सकता है। अगर भगवानको मुझसे काम लेना होगा, तो वह मुझे जिन्दा रखेगा, वर्ना मुझे अपने पास बुला लेगा।

"आपने अभी जो भजन सुना है, अुसमें कविने मनुष्यको कभी रामनाम न भूलनेका अुपदेश दिया है। भगवान ही मनुष्यका अेक आसरा है। अिसलिअे आजके संकटमें मैं अपने-आपको पूरी तरह भगवानके भरोसे छोड़ देना चाहता हूं और शरीरकी बीमारीके लिअे किसी तरहकी डॉक्टरी मदद नहीं लेना चाहता।"

—नअी दिल्ली, १८–१०–'४७

४२
रोजके विचार

बीमारी मात्र मनुष्यके लिअे शरमकी बात होनी चाहिये। बीमारी किसी भी दोषकी सूचक है। जिसका तन और मन सर्वथा स्वस्थ है, अुसे बीमारी होनी ही नहीं चाहिये।

—सेवाग्राम, २६–१२–'४४

विकारी विचार भी बीमारीकी निशानी है। अिसलिअे हम सब विकारी विचारसे बचते रहें।

—सेवाग्राम, २७–१२–'४४

विकारी विचारसे बचनेका अेक अमोघ अुपाय रामनाम है। नाम कंठसे ही नहीं, किन्तु हृदयसे निकलना चाहिये।

—सेवाग्राम, २८–१२–'४४

व्याधि अनेक हैं, वैद्य अनेक हैं, अुपचार भी अनेक हैं। अगर सारी व्याधिको अेक ही मानें और अुसका मिटानेहारा वैद्य अेक राम ही है अैसा समझें, तो हम बहुत-सी झंझटोंसे बच जायं।

—सेवाग्राम, २९–१२–'४४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आश्चर्य है कि वैद्य मरते हैं, डॉक्टर मरते हैं, फिर भी अुनके पीछे हम भटकते हैं। लेकिन जो राम मरता नहीं है, हमेशा जिन्दा रहता है और अचूक वैद्य है, अुसे हम भूल जाते हैं।

— सेवाग्राम, ३०-१२-'४४

अिससे भी ज्यादा आश्चर्य यह है कि हम जानते हैं कि हम भी मरनेवाले तो हैं ही, बहुत करें तो वैद्यादिकी दवासे शायद हम थोड़े दिन और काट सकते हैं और अिसलिअे ख्वार होते हैं।

— सेवाग्राम, ३१-१२-'४४

अिसी तरह बूढ़े, बच्चे, जवान, धनिक, गरीब, सबको मरते हुअे पाते हैं, तो भी हम संतोषसे बैठना नहीं चाहते और थोड़े दिन जीनेके लिअे रामको छोड़ सब प्रयत्न करते हैं।

— सेवाग्राम, १-१-'४५

कैसा अच्छा हो कि अितना समझकर हम रामके भरोसे रहकर जो भी व्याधि आवे, अुसे बरदाश्त करें और अपना जीवन आनन्दमय बनाकर व्यतीत करें!

— सेवाग्राम, २-१-'४५

अगर धार्मिक माना जानेवाला मनुष्य रोगसे दुःखी हो, तो समझना चाहिये कि अुसमें किसी-न-किसी चीजकी कमी है।

— सेवाग्राम, २२-४-'४५

अगर लाख प्रयत्न करने पर भी मनुष्यका मन अपवित्र रहे, तो रामनाम ही अुसका अेकमात्र आधार होना चाहिये।

— मद्रासके नजदीक पहुंचते हुअे, २१-१-'४६

मैं जितना ज्यादा विचार करता हूं, अुतना ही ज्यादा यह महसूस करता हूं कि ज्ञानके साथ हृदयसे लिया हुआ रामनाम सारी बीमारियोंकी रामबाण दवा है।

— अुरुळी, २२-३-'४६

आसक्ति, घृणा वगैरा भी रोग हैं और वे शारीरिक रोगोंसे ज्यादा बुरे हैं। रामनामके सिवा अुनका कोअी अिलाज नहीं है।

— अुरुळी, २३-३-'४६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनकी गन्दगी शरीरकी गन्दगीसे ज्यादा खतरनाक है; बाहरी गन्दगी आखिरकार भीतरी गन्दगीकी ही निशानी है।

—अुरुळी, २४–३–'४६

अीश्वरकी शरणमें जानेसे किसीको जो आनन्द और सुख मिलता है, अुसका कौन वर्णन कर सकता है?

—अुरुळी, २५–३–'४६

रामनाम अुन्हींकी मदद करता है, जो अुसे जपनेकी शर्तें पूरी करते हैं।

—नअी दिल्ली, ८–४–'४६

रामनाम जपके साथ-साथ अगर रामके योग्य सेवा न की जाय, तो वह व्यर्थ जाता है।

—नअी दिल्ली, २१–४–'४६

बीमारीसे जितनी मौतें नहीं होतीं, अुससे ज्यादा बीमारीके डरसे हो जाती हैं।

—शिमला, ७–५–'४६

तीन तरहके रोगोंके लिअे रामनाम ही यकीनी अिलाज है।

—नअी दिल्ली, २४–५–'४६

जो रामनामका आसरा लेता है, अुसकी सारी अिच्छाअें पूरी होती हैं।

—नअी दिल्ली, २५–५–'४६

अगर कोअी रामनामका अमृत पीना चाहता है, तो यह जरूरी है कि वह काम, क्रोध वगैराको अपने पाससे भगा दे।

—नअी दिल्ली, २०–६–'४६

जब सब कुछ अच्छा होता है, तब तो सब कोअी अीश्वरका नाम लेते ही हैं; लेकिन सच्चा भक्त तो वही है, जो सब कुछ बिगड़ जाने पर भी अीश्वरको याद करता है।

—बम्बअी, ६–७–'४६

रामनामका रसायन आत्माको आनन्द देता है और शरीरके रोग मिटाता है।

—पूना, ९–७–'४६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो पत्र

१

यरवडा मन्दिर
१२-११-१९३०

प्रिय . . .

शरीरकी तन्दुरुस्तीके लिअे तुम्हें कटिस्नान और सूर्यस्नान लेना चाहिये। और मनकी शान्तिके लिअे रामनाम सबसे बढ़िया अिलाज है। जब कोअी विकार तुम्हें तकलीफ दे, तब अपने आप पर संयम रखो। अीश्वरके प्रकाशमें चलनेका अेक ही रास्ता है, और वह है अुसकी पैदा की हुअी सृष्टिकी सेवा करना। अीश्वरकी कृपा या प्रकाशका अिससे दूसरा कोअी अर्थ ही नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

२

सेवाग्राम,
९-१-१९४५

प्रिय . . .

तुम्हारा पत्र मिला। तुम अच्छे होते हो या नहीं — अिसकी क्या परवाह है? हम जितना ज्यादा अीश्वर पर आधार रखेंगे, अुतनी ही ज्यादा मानसिक शान्ति हमें मिलेगी। बेशक, वैद्य और डॉक्टर तो हैं ही, लेकिन वे हमें अीश्वरसे बहुत दूर ले जाते हैं। अिसीलिअे मैंने तुम्हें वहां भेजना ज्यादा पसन्द किया। कुदरती अिलाज हमें अीश्वरके ज्यादा नजदीक ले जाता है। अगर हम अुसके बिना भी काम चला सकें, तो मैं अुसका कोअी विरोध नहीं करूंगा। लेकिन अुपवाससे हम क्यों डरें या शुद्ध हवासे क्यों बचें? कुदरती अिलाजका मतलब है कुदरत — अीश्वर — के ज्यादा नजदीक जाना। देखें मैं अिसमें कितना सफल होता हूं। मैं सचमुच शक्तिसे बाहर काम नहीं करूंगा।

बापूके आशीर्वाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच्चा डॉक्टर राम ही है

नोआखालीमें आमकी नामका अेक गांव है। वहां बापूजीके लिअे बकरीका दूध कहीं न मिल सका। सब तरफ तलाश करते-करते जब मैं थक गअी, तब आखिर मैंने बापूको यह बात बताअी। बापूजी कहने लगे : "तो अुसमें क्या हुआ? नारियलका दूध बकरीके दूधकी जगह अच्छी तरह काम दे सकता है। और बकरीके घीके बजाय हम नारियलका ताजा तेल निकालकर खायेंगे।"

अिसके बाद नारियलका दूध और तेल निकालनेका तरीका बापूने मुझे बताया। मैंने निकालकर अुन्हें दिया। बापूजी बकरीका दूध हमेशा आठ औंस लेते थे, अुसी तरह नारियलका दूध भी आठ औंस लिया। लेकिन हजम करनेमें बहुत भारी पड़ा और अुससे अुन्हें दस्त होने लगे। अिससे शाम तक बापूको अितनी कमजोरी आ गअी कि बाहरसे झोंपड़ीमें आते-आते अुन्हें चक्कर आ गये।

जब-जब बापूको चक्कर आनेवाले होते, तब-तब अुनके चिह्न पहले ही दिखाअी देने लगते थे। अुन्हें बहुत ज्यादा जंभाअियां आतीं, पसीना आता, और कभी-कभी वे आंखें भी फेर लेते थे। अिस तरह अुनके जंभाअियां लेनेसे चक्कर आनेकी सूचना तो मुझे पहले ही मिल चुकी थी। मगर मैं सोच रही थी कि अब बिछौना चार ही फुट तो रहा, वहां तक तो बापूजी पहुंच ही जायेंगे। लेकिन मेरा अन्दाज गलत निकला। और मेरे सहारे चलते-चलते ही बापूजी लड़खड़ाने लगे। मैंने सावधानीसे अुनका सिर संभाल रखा और निर्मलबाबूको जोरसे पुकारा। वे आये और हम दोनोंने मिलकर अुन्हें बिछौने पर सुला दिया। फिर मैंने सोचा — 'कहीं बापू ज्यादा बीमार हो गये, तो लोग मुझे मूर्ख कहेंगे। पासके देहातमें ही सुशीलाबहन हैं। अुन्हें न बुलवा लूं?' मैंने चिट्ठी लिखी और भिजवानेके लिअे निर्मलबाबूके हाथमें दी ही थी कि अितनेमें बापूको होश आया और मुझे पुकारा "मनुड़ी!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(बापूजी जब लाड़से बुलाते थे, तो मुझे मनुड़ी कहते थे।) मैं पास गअी तो कहने लगे — "तुमने निर्मलबाबूको आवाज लगाकर बुलाया, यह मुझे बिलकुल नहीं रुचा। तुम अभी बच्ची हो, अिसलिअे मैं तुम्हें माफ तो कर सकता हूं। परन्तु तुमसे मेरी अुम्मीद तो यही है कि तुम और कुछ न करके सिर्फ सच्चे दिलसे रामनाम लेती रहो। मैं अपने मनमें तो रामनाम ले ही रहा था। पर तुम भी निर्मलबाबूको बुलानेके बजाय रामनाम शुरू कर देती, तो मुझे बहुत अच्छा लगता। अब देखो यह बात सुशीलासे न कहना, और न अुसे चिट्ठी लिखकर बुलाना। क्योंकि मेरा सच्चा डॉक्टर तो राम ही है। जहां तक अुसे मुझसे काम लेना होगा, वहां तक मुझे जिलायेगा, और नहीं तो अुठा लेगा।"

'सुशीलाको न बुलाना' यह सुनते ही मैं कांप अुठी और मैंने तुरत निर्मलबाबूके हाथसे चिट्ठी छीन ली। चिट्ठी फट गअी। बापूने पूछा — "क्यों, तुमने चिट्ठी लिख भी डाली थी न?" मैंने लाचारीसे मंजूर किया। तब कहने लगे — "आज तुम्हें और मुझे अीश्वरने बचा लिया। यह चिट्ठी पढ़कर सुशीला अपना काम छोड़कर मेरे पास दौड़ी आती, वह मुझे बिलकुल पसन्द न आता। मुझे तुमसे और अपने आपसे चिढ़ होती। आज मेरी कसौटी हुअी। अगर रामनामका मन्त्र मेरे दिलमें पूरा-पूरा रम जायगा, तो मैं कभी बीमार होकर नहीं मरूंगा। यह नियम सिर्फ मेरे लिअे ही नहीं, सबके लिअे है। हरअेक आदमीको अपनी भूलका नतीजा भोगना ही पड़ता है। मुझे जो दुःख भोगना पड़ा, वह मेरी किसी भूलका ही परिणाम होगा। फिर भी आखिरी दम तक रामनामका ही स्मरण होना चाहिये। वह भी तोतेकी तरह नहीं, बल्कि सच्चे दिलसे लिया जाना चाहिये। रामायणमें अेक कथा है कि हनुमानजीको जब सीताजीने मोतीकी माला दी, तो अुन्होंने अुसे तोड़ डाला; क्योंकि अुन्हें देखना था कि अुसमें रामका नाम है या नहीं। यह बात सच है या नहीं, अुसकी फिकर हम क्यों करें? हमें तो अितना ही सीखना है कि हनुमानजी जैसा पहाड़ी शरीर हम अपना न भी बना सकें, फिर भी अुनके जैसी आत्मा तो जरूर बना सकते हैं। अिस अुदाहरणको यदि आदमी चाहे तो सिद्ध कर सकता है। हो सकता है कि वह न भी सिद्ध कर पाये। लेकिन यदि सिद्ध करनेकी कोशिश ही करे, तो भी काफी है। गीतामाताने कहा ही है कि मनुष्यको कोशिश करनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चाहिये और फल ओश्वरके हाथमें छोड़ देना चाहिये। असलिअे तुम्हें, मुझे और सबको कोशिश तो करनी ही चाहिये। अब तुम समझी न कि मेरी, तुम्हारी या किसीकी बीमारीके विषयमें मेरी क्या धारणा है?"

अुसी दिन अेक बीमार बहनको पत्र लिखते हुअे भी बापूने यही बात लिखी — "संसारमें अगर कोओी अचूक दवाओी हो तो वह रामनाम है। अिस नामके रटनेवालोंको अिसका अधिकार प्राप्त करनेके लिअे जिन-जिन नियमोंका पालन करना चाहिये, अुन सबका वे पालन करें। मगर यह रामबाण अिलाज करनेकी हम सबमें योग्यता कहां है?" . . .

(मेरी रोजकी नोआखालीकी डायरीमें से)

अूपरकी घटना ३० जनवरी, १९४७ के दिन घटी थी। बापूकी मृत्युसे ठीक अेक साल पहले।

रामनाम परकी अुनकी यह श्रद्धा आखिरी क्षण तक अचल रही। १९४७ की ३० वीं जनवरीको यह मधुर घटना घटी; और १९४८ की ३० वीं जनवरीको बापूने मुझसे कहा कि 'आखिरी दम तक हमें रामनाम रटते रहना चाहिये।' अिस तरह आखिरी वक्त भी दो बार बापूके मुंहसे 'रा . . . म! रा . . . म!' सुनना मेरे ही भाग्यमें बदा होगा, अिसकी मुझे क्या कल्पना थी? ओश्वरकी गति कैसी गहन है!

('बापू — मेरी मां' से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूची

अल्लाह —के नामसे भगवानको पहचानना ३१; —यानी राम-नाम, खुदा, गॉड, २५; —राम व गॉड अेकार्थक ७; —वही जो गॉड व ओश्वर है १४

अस्पताल ४१; —पर गांधीजीकी सम्मति ३०

आंतरिक शांति, प्रार्थना बिना नहीं मिलती १०

आत्मा ५१; —अमर है, शरीर नहीं २५

आयुर्वेद २६, ३६, ४२; —और कुदरती अिलाज २६, ३६

ऑपरेशन और रामनाम ४७

अिन्फेण्टाअिल पैरेलिसिस ३३

ओश्वर —अेक शक्ति है २३; —और अुसका कायदा २६; —का दर्शन, अपने अन्दर ३४; —का सच्चा भक्त ६८; —के अनेक नाम २५, २७; —के हजार नाम २७, ५३; —मनुष्य नहीं २२; —वैद्य भी है ३३

ओसा १४

अुपवास और प्रार्थना ३०

अुरुळीकांचन २३, ३७-४०, ५६

कटिस्नान ३७, ६९; —बाहरी मददके रूपमें ६

किशोरलाल मशरूवाला ५४

कुदरत —के नियम ४४-४५; —के कानूनोंका पालन ४७; —के साथ मेल साधकर रहना ५७

कुदरती अिलाज (अुपचार) २४-२५, २९-३०, ३५-३६, ३८-४२, ४६; —का जरूरी हिस्सा पथ्य परहेज ४१; —की गांधीजीकी कल्पना २४; —की हद पांच महाभूतोंका असल अुपयोग ३६; —के दो पहलू ४०; —गरीबोंके लिअे ४१; —पर गांधीजीके विचार ३१, ४०-४१; —में मसाले और पाक वगैराका स्थान ३६

कुने ३१, ४३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
क्रिश्चियन साअिन्टिस्ट ३४; —सायन्स ३३, ४७
क्नेअिप, फादर ४३
गणेशशास्त्री जोशी, वैद्यराज २६
गांधीजी ५५-६६; —और गरीबोंके लिअे कुदरती अिलाज ३१; —का अच्छा हिन्दू, मुसलमान और अीसाअी होनेका दावा ५३; —का अुरुळीकांचनमें बीमारोंको रामनामके साथ अिलाज सुझाना ३८; —का भूतप्रेतसे डरना ३; —का सनातनी हिन्दू होनेका दावा ५३; —का विचारों पर पूरा-पूरा काबू न होना कबूल करना ४; —की 'करो या मरो' की प्रतिज्ञा ५४; —की बीमारीके विषयमें धारणा ७२; —की नश्तर लगवानेकी तैयारी अुनके मनकी दुर्बलता ४; —कुदरती अिलाजके पक्के हिमायती ३१; —पूर्णताके साधकमात्र ४; —मूर्तिपूजकों-की अुतनी ही अिज्जत करने-वाले २२; —मूर्तियोंको नहीं मानते २२
गोमतीबहन ५४
चरक २६, २७, २९, ३३, ३५
जंतर-मंतर और रामनाम १६
जुस्ट ३१, ४३
तुलसीदास १९, २१, २३, २८
दीनशा मेहता, डॉ० ६५
दूध —गायका, खानेमें आरोग्यप्रद ४०; —मरीजोंके लिअे अुप-योगी ४०; —पैदा करना कुदरती अिलाजका खास अंग ४२; —सेहतके लिअे बहुत ज्यादा जरूरी ४०
धर्म ३; —मूलमें सब अेक हैं २१; —संबंधी गांधीजीका मत ३, ३८
नियम —कुदरतके ३५, ४४-४५; —ब्रह्मचर्यकी रक्षाके २३; —सफाअीके ३१; —स्वास्थ्यकी हिफाजतके ४४
निर्मलबाबू ७०, ७१
'न्यू सायन्स ऑफ हीलिंग' ३१
पंच (पांच) महाभूत ३४, ३६, ३८, ४२, ४५
प्राकृतिक अुपचारक २९
प्रार्थना १०, ६२, ६३; —के बिना आंतरिक शांति नहीं १०; —प्रवचन ५६-६६; —में श्रद्धा रखनेवाला निराश नहीं होता ६३; —सामूहिक रूपमें ६१
पिअरे सेरेसोल ११
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फेथ-हीलर ३४
फौजी ताकतका दिवालियापन १३
बच्चोंके प्रति मां-बापकी जिम्मेदारी ३५
'बाक' ११
बीमारी ४०, ६२; –आ ही नहीं सकती, जहां विचार शुद्ध हों ४७; –को रोकना अिलाजसे बेहतर ३१; –तन और मनकी ३८; –रूहानी १९
ब्रह्मचर्य ५, २२; –का अर्थ जननेन्द्रिय पर काबू पाना २४; –का साधन ५; –सिद्ध करनेके अुपाय ६
भगवान –की कृपा ५९; –निराधारका आधार है १०
महादेवभाअी ४४
मानसिक अुपचार ३२
युक्ताहार ३५, ४२; –और मिताहार, ३५, ४४
रंभा, गांधीजीकी धाय ३, २८
राम –और रावण भलाअी और बुराअीके प्रतीक ५४; –कौन? १९; –गांधीजीके १८, १९, २०-२२
रामकृष्ण २८; –परमहंस (अेक अवतार) ४४
रामधुन १३, २०, ३७, ५६; –की ताकत फौजी ताकतसे अलग और कअी गुना बढ़ी-चढ़ी १३; –में गैर हिन्दुओंका भाग १८
रामनाम १२; –आदमीको खुद ही अपना वैद्य या डॉक्टर बना देता है २०; –और जंतर-मंतर १६; –और विश्वास-चिकित्सा ४५; –के प्रति नौजवानोंकी भावना ३२-३५; –जंतर-मंतर या जादू-टोना नहीं २९; –जैसी शांति प्रदान करनेवाली कोअी शक्ति नहीं ३८; –डरको भगानेवाला अमोघ मंत्र २७; –नीतिरक्षाका अुपाय ४-६; –बढ़ियासे बढ़िया कुदरती दवा ३७; –में गांधीजीकी अत्यंत श्रद्धा ५०; –यकीनी अिमदाद १५; –रामबाण अिलाज २५; –शारीरिक रोगोंको दूर करनेका सबसे बढ़िया अिलाज ३२; –सिर्फ हिन्दुओंके लिअे ही नहीं १८
रामायण ३, ४, २८
'रिटर्न टु नेचर' ३१
लाधा महाराज ३, ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लोथियन, लॉर्ड ३३, ३४
वल्लभराम वैद्य ३६
वाग्भट २६, २९
विद्यार्थी ९; –भगवानसे सहायता मांगें ९
विलकिनसन १२
शंकरन् ५४
शरीर –ओश्वरकी सेवा करनेका अेक जरिया ५९; –का आत्मासे संबंध ४-५; –की बीमारियां २९, ६४; –पांच तत्त्वोंसे बना ३८; –भौतिक ३९, ५८; –ओश्वरका मंदिर ३९
श्रद्धा ३३, ४५; –का चमत्कार ६३; –का दिवाला २८; –बनाम विद्वत्ता ७; –रामनाम पर ६१; –से रोग दूर होना ३३
'सर्वरोगहारी' २६
संयम –विषयेन्द्रियका ५; –स्वादेन्द्रियका ५
साअिको-थेरेपिस्ट ३४
सुशीला (बहन), डॉ० ६५, ७०, ७१
सूर्यस्नान ३७, ६९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सर्वोदय

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक : **गांधीजी**; संपा० **भारतन् कुमारप्पा**

गांधीजीके मतानुसार सर्वोदयका अर्थ आदर्श समाज-व्यवस्था है। अिस पुस्तकमें सर्वोदयकी विस्तृत चर्चा की गअी है और बताया गया है कि वह कैसे सिद्ध किया जा सकता है। अिस संग्रहका अुद्देश्य संसारके सामने गांधीजीका शांति और स्वतंत्रताका अुदात्त संदेश पेश करना है।

कीमत २.०० डाकखर्च ०.८७

संसार और धर्म

लेखक : **कि० घ० मशरूवाला**

अिस पुस्तकमें श्री किशोरलाल मशरूवालाने अपने मार्मिक और मौलिक ढंगसे जिन विषयोंकी विशद चर्चा की है, वे मुख्यत: ये हैं : १. धर्म और तत्त्व-चिन्तनकी दिशा अेक हो तभी दोनों सार्थक बनते हैं; २. कर्म और अुसके फलका नियम केवल वैयक्तिक नहीं, बल्कि सामूहिक भी है; ३. मुक्ति कर्मके विच्छेदमें या चित्तके विलयमें नहीं, परन्तु दोनोंकी अुत्तरोत्तर शुद्धिमें है; ४. मानवताके सद्‌गुणोंकी रक्षा, पुष्टि और वृद्धि ही जीवनका परम ध्येय है। पुस्तकके आरंभमें प्रसिद्ध तत्त्वचिन्तक पंडित सुखलालजीकी ‘विचार-कणिका’ तथा अन्तमें श्री केदारनाथजी जैसे साधु-पुरुषकी ‘पूर्ति’ने पुस्तककी अुपयोगितामें और भी वृद्धि कर दी है।

कीमत २.५० डाकखर्च १.००

नवजीवन कार्यालय
अहमदाबाद–१४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

04595 श्री धर्मदत्त वैद्य संग्रह

मंगल-प्रभात

लेखक : **गांधीजी**; अनु० **अमृतलाल नाणावटी**

सन् १९३० में गांधीजी यरवडा जेलमें थे। वहांसे वे प्रत्येक मंगलवारको आश्रमके व्रतों पर विवेचन लिखकर साबरमती आश्रमके सदस्योंको भेजा करते थे। अिसमें सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्वाद, अस्तेय, अपरिग्रह आदि आश्रम-व्रतोंका गांधीजी द्वारा किया हुआ सरल और सुबोध विवेचन पाठकोंको मिलेगा। अिस हिन्दी अनुवादमें सिर्फ अुर्दू जाननेवालोंकी सुविधाके लिअे आसान अुर्दू शब्द भी दिये गये हैं।

कीमत ०.३७ डाकखर्च ०.१३

गुरुकुल कांगड़ी पुस्तकालय

यरवडाके अनुभव

लेखक : **गांधीजी**; अनु० **रामनारायण चौधरी**

अिस छोटीसी पुस्तिकामें गांधीजीने भारतकी अपनी प्रथम जलयात्रा (१९२२) के अनुभवोंका वर्णन किया है। यहां हम अेक आदर्श सत्याग्रही कैदीके रूपमें गांधीजीका दर्शन करते हैं। अिसमें अुन्होंने जेल-अधिकारियों, कैदी-वार्डरों, सत्याग्रही कैदियों तथा अपने अध्ययनके बारेमें दिलचस्प बातें बतायी हैं। पुस्तकके प्रास्ताविक विभागमें गांधीजी पर चलाये गये मुकदमेकी पूरी कार्रवाअी और अन्तमें अधिकारियोंके साथ हुआ अुनका पत्रव्यवहार भी दिया गया है।

कीमत १.०० डाकखर्च ०.२५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar